ISSN : 2456-8856

पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510 डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2021-2023 उज्जैन (म.प्र.)

UGC Care Listed and Peer Reviewed Referred Bilingual Monthly International Research Journal

प्रेषण दिनांक 30 पृष्ठ संख्या 28

आश्वस्त

वर्ष 24, अंक 223 मई 2022

संपादक – डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

वर्ष : 24 अंक 223
मई 2022

आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/9510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक
सेवाराम खाण्डेगर
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
आयु. सूरज डामोर IAS
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
डॉ. तारा परमार
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात
डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

Peer Review Committee
डॉ. श्रवणकुमार मेघ, जोधपुर(राजस्थान)
प्रो. दत्तात्रय मुरुमकर, मुंबई (महाराष्ट्र)
प्रो. रश्मि श्रीवास्तव, उज्जैन (म.प्र.)
डॉ. ए.बी.सावंत, सांगली (महाराष्ट्र)

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	अपनी बात	डॉ. तारा परमार	03
2.	महात्मा गाँधी के विचारों का आदिवासी समाज पर प्रभाव झारखण्ड के टाना भगत समाज के विशेष संदर्भ में	ललितचन्द्र महतो	04
3	WANDERING FIRE : AS A HIGH FANTASY	Adv. Dr. Baliram A Sawant	08
4.	आत्मजयी में युगबोधीय चेतना	पवन कुमार पाण्डेय	13
5.	गीता एवं योग-सूत्र में ईश्वर का स्वरूप	मनोज कुमार, सुरेन्द्र कुमार	16
6.	पुलिस तंत्र की विसंगतियों के प्रति बुलाकी शर्मा की व्यंग्य दृष्टि	डॉ. निर्मल कुमार रांकावत	20
7.	आपराधिक मामलों में न्याय प्रदान कराने में मध्य प्रदेश लोक अभियोजन की भूमिका	रामकुमार खत्री	25

UGC Care Listed Journal

खाते का नाम - आश्वस्त (Ashwast)
खाते का नं.- 63040357829
बैंक - भारतीय स्टेट बैंक,
शाखा- फ्रीगंज, उज्जैन (Freeganj, Ujjain)
IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com
E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 20/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 200/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 2,000/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 20,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेंगा।

अपनी बात

जीवन में क्रान्ति का मूलमंत्र है–'जागरण की क्रान्ति' गौतम बुद्ध का संदेश है 'अप्पो दीपो भव' अपने ज्ञान की ज्योति जलाओ। जागने की कोशिश ही धम्म मार्ग पर आरूढ़ होने की प्रक्रिया है। जागने की विधि का नाम 'ध्यान' है। जागना ही एकमात्र 'प्रार्थना' है, जागना ही 'उपासना' है। जो जागते हैं वे निर्माण को उपलब्ध हो जाते हैं।

बुद्ध ने सम्बोधि की प्राप्ति के बाद 45 वर्षों तक, अपनी अंतिम सांस चलने तक 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' और 'लोकानुकम्पा' की भावना का पालन किया। बुद्ध लोगों को जो सिखाते थे उसे वे 'सद्धम्म' अथवा 'धम्म' कहते थे। उन्होंने तन–मन, जीवन और जगत के विषय में प्रकृति के विधि–विधान को ही 'धम्म' कहा है। बुद्ध के अनुसार प्रकृति का वह कानून जो समान रूप से संसार के सभी प्राणियों पर लागू होता है वही 'धम्म' है। जिसे कण–कण धारण किये हुए हैं तथा जो कण–कण को धारण किये है, वही 'धम्म' है। वे कहते है–'अत्ता हि अत्तनो नाथो' आप ही अपने स्वामी हो, आप ही अपनी गति हो। अपने अच्छे या बुरे के लिये आप स्वयं ही तो जिम्मेदार हो। इसलिये अपने दीपक आप बनो।

तथागत बुद्ध की समस्त शिक्षाएं वैज्ञानिक तर्क की कसौटी पर पूर्णतः खरी उतरी है। बुद्ध के सभी आदर्शों का मूलभूत सिद्धांत है–समानता, मानवता, करूणा, मैत्री, भाईचारा, सद्भाव, अहिंसा, न्याय, भावनात्मक एकता, सामूहिक विकास और परस्पर समन्वय की भावना। विश्व में बौद्ध धम्म ही एकमात्र ऐसा प्राचीन धम्म है जिसमें पंचशील–हिंसा न करना, चोरी न करना, असत्य न बोलना, व्यभिचार न करना एवं नशीली वस्तुओं का सेवन न करना आदि पालन करने का वचन लिया जाता है और सब प्राणिजगत के कल्याण की कामना–**'सब्बे सत्ता सुखी होन्तु, सब्बे होन्तु च खेमिनो, सब्बे भद्राणि पस सन्तु माकच्चि दुक्ख भागवा'** की जाती है। तथागत ने संघ के सभी भिक्षुओं को आदेश दिया कि **'चरथ लोकानुकम्पाय'** अर्थात् जाओ भिक्षुओं जन–जन के कल्याण के लिए और जन–जन के सुख के लिए विचरण करो।

महा कारुणिक बुद्ध ने चार आर्य सत्य का उद्घाटन किया दुख सत्य है–जन्म दुख का कारण है। जरा दुख है। रोग दुख है। मृत्यु दुख है। प्रिय का वियोग दुख है। उन्होंने कहा तृष्णा और वासना दुख का मुख्य कारण है। उन्होंने आगे बताया कि दुख का निरोध कैसे हो। जिस कारण से दुख की स्थिति बनती है, उसे हटा देना चाहिए। धम्म का प्रचार बहुजन हिताय व बहुजन सुखाय के लिये हो। मनुष्य का जिसमें कल्याण हो, उस धम्म और उपदेश को प्रचारित करें। उन्होंने मानव कल्याण के लिए जो संदेश दिये, हजारों वर्षों से वे इसी तरह मनुष्य का मार्गदर्शन करते आ रहे हैं। जब तक मनुष्य है तब तक उसका दुख भी है। जब तक दुख है बुद्ध के उपदेशों की गूंज भी कम नहीं होगी, उनके उपदेश सार्वकालिक और सार्वभौमिक है।

वर्तमान में विश्व परिदृश्य में जिस तरह की परिस्थितियाँ विद्यमान है उसने सम्पूर्ण विश्व को चिंता में डाल दिया है। रूस–यूक्रेन के युद्ध ने सारे विश्व के जनजीवन को प्रभावित किया है। इतिहास साक्षी है कि हिंसा से हिंसा बढ़ी है, भय से भय बढ़ा है। आतंक से आतंक बढ़ा है और युद्ध से युद्ध बढ़ा है। तथागत ने ऐसी परिस्थितियों का कारण काम, भाव और विभव की तृष्णा बताया है। उन्होंने इन्द्रिय संयम, मन–वचन–कर्म, संकल्प, जीविका, स्मृति और समाधि में अहिंसक होने की शिक्षा दी और सुख–दुख की अति से बचने के लिये मध्यम मार्ग का संदेश देकर शील, समाधि और प्रज्ञा के व्यवहारिकता की कसौटी पर उतारने की प्रेरणा दी। समाज को विक्षिप्तावस्था से उठाकर व्यक्ति, राष्ट्र और विश्व प्रेम, शांति व बंधुत्व की भावना को उजागर किया। युद्ध का शमन कर शांति–पथ गामी बनने और राष्ट्र को अहिंसा मानवता, मैत्री, सौहार्द प्रधान बनाने का आज एकमात्र मार्ग है–हमें युद्ध या बुद्ध के विकल्प को अपनाना होगा। बौद्ध धम्म का मंत्र है–विश्व में शांति रहे। उनके मानवीय कल्याण संबंधी शिक्षाओं को दृष्टिगत रखकर ही विश्व में एक शांतिमय संघ अर्थात् संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की गई है।

– डॉ. तारा परमार

महात्मा गाँधी के विचारों का आदिवासी समाज पर प्रभाव : झारखण्ड के टाना भगत समाज के विशेष संदर्भ में

– ललितचन्द्र महतो

भारत विश्व की सबसे समृद्ध और गौरवशाली संस्कृति का जीता जागता उदाहरण है। 21 वीं सदी का भारत पाश्चात्य संस्कृति के बाहरी आवरण में कितना भी रम गया हो, विज्ञान और तकनीक ने कितना भी विकास देखा हो, इसकी आत्मा अभी भी हड़प्पा संस्कृति या उससे भी कहीं प्राचीन ही है। गांवों और जंगलों में निवास करनेवाली आदिवासी संस्कृति आज भी भारत के रग–रग में बसी हुई है। अंग्रेजों ने भारतीय अदिवासियों के मामलों में जितना भी दखल देने की कोशिश की, यह संस्कृति और तेजी से उभरी। आदिवासी समाज अपनी संस्कृति के बल पर ही एकता के एक सूत्र में बंधे और अंग्रेजों के खिलाफ संगठित विद्रोह का एक लम्बा इतिहास चला और ये चलता रहा जब तक वे देश छोड़कर चले नहीं गए। इस बात से एक बात सिद्ध होती है कि ताकत और बन्दूक के बल से डरा धमकाकर आदिवासी समाज को नहीं बदला जा सकता। इस समाज को समाज के मुख्य धारा में प्रेम और अपनापन के डोर से ही जोड़ा जा सकता है। अनेक समाज सुधारकों ने इसमें अपना योगदान दिया है। महात्मा गाँधी का योगदान इसमें बहुत ही महत्वपूर्ण है। इनमें पारंपरिक नेताओं से अलग साधारण जनमानस के रहन–सहन में घुल–मिल जाने की एक चुम्बकीय क्षमता थी। इन्हें कोई गाँधी बाबा कहकर पुकारता तो कोई इन्हें अपना तारनहार नजर आता। झारखण्ड का टाना भगत भी ऐसा ही आदिवासी समाज है, जो गांधीजी के व्यक्तित्व और कार्य करने की क्षमता से अत्यंत प्रभावित हुआ और उनके कथनानुसार अपने जीवन और रहन–सहन में आमूल–चुल परिवर्तन ले आया।

झारखण्ड के टाना भगत असल में उराँव जनजाति समुदाय के है। अधिकतर इतिहासकारों का मानना है कि इनका आगमन डेक्कन के पठार इलाके में आज के कर्नाटक प्रान्त से हुआ है। इनकी भाषा कुडुख भी कर्नाटक की राजकीय भाषा कन्नड से बहुत मेल खाती है। यह झारखण्ड का दूसरा सबसे बड़ा और पूरे भारत बर्ष का चौथा सबसे बडा आदिवासी समाज है। वर्तमान में टाना भगत झारखण्ड के रांची, गुमला, लोहरदगा, पलामू, लातेहार, सिमडेगा, और खूटी जिले में निवास करते हैं। ब्रिटिश प्रशासनिक व्यवस्था और झारखण्ड में वन कानून लागू होने के बाद इन पर शोषण बढ़ने लगा। ब्रिटिश एजेंट, जमींदार और साहूकार इन भोले–भाले लोगों पर तरह–तरह के अत्याचार करने लगे। पहले इनकी जमीनों पर कब्जा कर लिया और फिर बाद में इन्हें अपने घरों और खेत–खलिहानों में बेगारी कराने लगे। काम कराकर मजदूरी नहीं दी जाने लगी और मांगने पर मारने–पीटने लगे। ऊँची दरों पर साहूकारों ने इनसे सूद वसूलना शुरू कर दिया और उधार न चुका पाने पर इनकी जमीन–जायदाद पर कब्जा कर लिया। शराब पिलाकर औने–पौने दामों पर इनकी बपौती संपत्ति भी हथिया ली गयी। इन सबका असर ये हुआ कि ये अंग्रेजी शासन व्यवस्था से असंतुष्ट हो गए और पुरानी प्रणाली लागू करने के लिए छटपटाने लगे। इन सब में इनके नेता के रूप में उभरे जतरा उराँव और जिसे बाद में जतरा भगत के नाम से जाना जाने लगा। इनके जतरा उराँव से जतरा भगत बनने की कहानी बहुत रोचक है। जतरा उराँव का जन्म झारखण्ड के गुमला जिले के विशुनपुर प्रखंड अंतर्गत चिंगारी नवाटोली में सन् 1888 में हुआ। जतरा उराँव बचपन से ही अपने

सहपाठियों से कुछ अलग स्वभाव के थे। वह अपने गाँव चिंगारी से कुछ किलोमीटर दूर स्थित हेसाग गाँव के भंगा भगत के यहाँ झाड़–फूंक तथा 'मति–ओझा' के मन्त्र सिखने जाता था। एक दिन जब ये तलाब में स्नान कर रहे थे तो धर्मेश (सूर्य देव–उराँवों के आराध्य देव) ने दर्शन दिया और इन्हें अदृश्य शक्तियां प्रदान की और इनसे कहा कि ये उराँव का ख्याल रखे। तब से ये जतरा भगत कहलाने लगे। उराँव समुदाय में भगत का संबोधन उन्हें किया जाता है जो पंडित होते हैं जिन्हें बहुत ज्ञान होता है।

जतरा उराँव गांधीवादी आन्दोलन की तरह ही एक आन्दोलन चलाकर अपने समुदाय के धार्मिक और आर्थिक समस्याओं से छुटकारा दिलाना चाहते थे। सन् 1914 में इनके द्वारा शुरू किया गया ताना भगत आन्दोलन एक सांस्कृतिक आन्दोलन था। जिसका मुख्य उद्देश्य समुदाय से धार्मिक बुराइयों को खत्म करना तथा आर्थिक परेशानियों से निजात दिलाना था. इन्होंने इस दौरान मुख्यतः चार बातों पर विशेष जोर दिया – एकेश्वरवाद का पालन करना (धर्मेश की पूजा), दारू और मुर्गा का त्याग करना, गाय और बैल को पवित्र मानना तथा जमींदारों और साहूकारों के यहाँ बेगारी–मजदूरी करने से रोकना। इनकी ये नीतियाँ गांधीजी के द्वारा आह्वान किये गए सत्याग्रह आन्दोलन से बहुत मिलती–जुलती थी। इनके द्वारा दिए जाने वाले उपदेशों का इनके समुदाय पर गहरा प्रभाव पड़ा। लोगों ने शराब, मांस, मदिरा का त्याग कर दिया और दारू की दुकानों में धरना देना शुरू कर दिया। लोगों का ब्रिटिश प्रशासन के खिलाफ डर खत्म होने लगा और वे बेगारी करने तथा अनैतिक आदेशों को मानने से मना करने लगे। लोगों ने गाय बैल की पूजा शुरू कर दी और कइयों ने तो जातरा भगत के प्रभाव में आकर खेती–बाड़ी करना ही छोड़ दिया और पारंपरिक स्थान्तरित कृषि करना शुरू कर दिया। इन सब का असर यह हुआ कि भू–लगान वसूली कम होने लगी और अंग्रेजी प्रशासन ने जतरा भगत को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया और कठोर यातनाएं दी गयी। जेल से रिहा होने के बाद दो महीने के अन्दर 1918 में उनका देहांत हो गया। किन्तु उनका यह आन्दोलन कमजोर नहीं पड़ा वरन ये और मजबूत होकर उभरा। मसीही स्वरुप को मानने के कारण टाना भगतों में एक विश्वास था कि एक मसीहा आयेंगे जो इनके दुखों से छुटकारा दिलाएंगे। जब इनकी मृत्यु हुई, उसी दौरान भारतीय राजनीति में महात्मा गाँधी का प्रादुर्भाव हो रहा था। गाँधीजी की सत्य और अहिंसा पर आधारित विचारधारा बहुत हद तक टाना भगत आन्दोलन से मिलती थी, इसलिए टाना भगत ये मानने लगे कि ये ही जतरा भगत के उत्तराधिकारी हैं जो उनके दुःख दर्द को खत्म करने के लिए अवतरित हुए हैं । महात्मा गाँधी जब असहयोग आन्दोलन के दौरान झारखण्ड के दौरे पर 1920 में आए तो उनकी मुलाकात टाना भगतों के साथ कराई गयी थी। महात्मा गाँधी इनके अहिंसक आन्दोलन और कार्यों से अत्यधिक प्रभावित हुए। टाना भगत भी गांधीजी से प्रेरित होकर असहयोग आन्दोलन में सक्रीय रूप से भाग लिया। 1921 में कुडू (रांची) में असहयोग आन्दोलन को सफल करने के लिये 8000 से अधिक टाना भगतों ने भाग लिया था। इन्होने बाद में कांग्रेस के आन्दोलनों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। परन्तु राजनीतिक भागीदारी के साथ–साथ गाँधीवादी विचारों का इनके सामाजिक–सांस्कृतिक स्तर पर भी गहरा प्रभाव पड़ना साबित हुआ। आज भी इनका समाज गांधीवादी विचारों को सबसे ज्यादा तरजीह देता है और इस कारण बहुत सारी सामाजिक बुराइयों से ये अछूते है।

भारत में कोरोना वायरस ने लोगों के जीवन पर गहरा प्रभाव डाला। लाखों लोग काल के गाल में समा गए। झारखण्ड के अन्य आदिवासी समाज को भी बुरी तरह इसने अपनी चपेट में ले लिया। झारखण्ड में

कोरोना ने भयानक तबाही मचाई। साढ़े तीन लाख से अधिक लोग कोरोना से बीमार हुए। 5 हजार से अधिक लोगों की मौत हो गयी। परन्तु टाना भगतों की सरलता और स्वच्छता सम्बन्धी अपनाये गए उच्चतर मापदंडों का ही परिणाम है कि एक भी टाना भगत कोरोना से पीड़ित नहीं हुआ और उन्हें अस्पताल जाने और दवा लेने की जरुरत नहीं पड़ी। विशेषज्ञ मानते हैं कि 25000 की आबादी वाली टाना भगत जनजाति पर इस बीमारी से पीड़ित नहीं होने का सबसे बड़ा कारण इनकी गाँधीवादी जीवन शैली है। झारखण्ड में आज भी टाना भगत प्रकृतिवादी हैं और साफ–सफाई पर बहुत अधिक जोर देते हैं। बड़े–बुजुर्ग अब भी अपना जनेऊ अपने कटे हुए सूत से ही तैयार करते हैं। ये सिर्फ अपने घर में बना खाना ही खाना पसंद करते हैं और घर के बाहर रहने पर भी बाहर का खाना खाने से बचते हैं। बिना स्नान किये महिलाएं किचन में नहीं जातीं और खाना नहीं पकातीं। पुरुष और महिलाएं सभी बिना स्नान किये खाना नहीं खाते। इनके आंगन में तुलसी का चबूतरा अवश्य होता है जिसकी ये रोज पूजा करते हैं।

गांधीजी के विचारो का ही प्रभाव है कि ये अहिंसा के परम पूजारी बन गए। इन्हें पता चल गया कि इनके समाज के पतन के पीछे मूलतः नशापान ही है। जतरा भगत ने इसकी शुरुआत की और बाद में उनके अनुयायियों ने इसे आगे बढाया। यद्यपि शिबू भगत (जिसने असहयोग आन्दोलन के समय टाना भगतों का नेतृत्त्व किया था) ने अपने अनुयायियो को मांस सेवन की अनुमति दी थी जिन्हें जुलाहा भगत कहा गया, परन्तु टाना भगतों का एक बड़ा समूह इसके पक्ष में नहीं थे और इन्हें अरुवा भगत कहा जाता है। बहुत सारे टाना भगत आज भी चप्पल–जूते नहीं पहनते क्योंकि इसे बनाने में चमड़े का प्रयोग होता है।

महात्मा गाँधी से प्रेरित होकर ही इन्होंने स्वदेशी सामानों का उपयोग करने का व्रत लिया। 1921 में कुडू में टाना भगतों ने असहयोग आन्दोलन को सफल बनाने के लिए जो बैठक की थी उसमें स्वदेशी अपनाने पर जोर दिया गया और चरखा कात कर खादी पहनने की जो प्रथा शुरू हुई वो आज भी कायम है। आज भी लोग खादी पहनते हैं, गांधीजी की तरह धोती पहनने को तरजीह देते है और गाँधी टोपी धारण करने में फक्र महसूस करते हैं। स्पष्टतः आज अगर कोई समाज गांधीवादी विचारधारा के सच्चे वाहक हैं तो ये यही समाज है।

झारखण्ड सहित आदिवासी समाज की एक महत्वपूर्ण समस्या डायन प्रथा, काला जादू, भूत–पिशाच के अस्तित्व में विश्वास है। आज भी गाँव में लोग बीमार होने पर डॉक्टर के पास जाने से पहले ओझा–गुणी से झडप फूंक और निम्छा (ओझा के कहे अनुसार मुर्गा, बतख, बकरा, भेड की बलि) करने में ज्यादा विश्वास करते हैं। समाज में वैमनस्यता, झगडे और हत्यायें भी हो जाती है। डायन और ओझा–गुणी के नाम पर विधवाओं और बूढी औरतों को विशेष रूप से प्रताड़ित किया जाता है, परन्तु टाना भगत समाज में ऐसे अंध–विश्वास नहीं पाए जाते। गांधीजी की बातों का इन लोगों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा और ये इन टोटकों पर विश्वास नहीं करते हैं। इनका नाम भी टाना भगत अपनी इसी विशेषता के कारण पड़ा है। 'टाना' शब्द का शाब्दिक अर्थ है दु खींचना अर्थात अपने आन्दोलन से अपने धर्म–संस्कृति और समाज से कुरीतियों को खींच कर उसे दूर करना। कहा जाता है कि जतरा भगत को जब भगवान धर्मेश ने तलाब में स्नान करते हुए दर्शन दिए तो उसके बाद जतरा भगत के जो शब्द थे वो टाना से ही शुरू हुआ था। आज भी उनके इन शब्दों को गाने के रूप में पिरोकर रखा गया है और ये गाना खूब प्रचलित है। गाने के बोल कुछ इस प्रकार हैं – टाना बाबा टाना, भूतनी के टाना, कोची भूतनी के टाना टाना बाबा, टान–टून टाना, कासा–पीतर मना, ढकनी में

खाना.. मांस मदिरा मना, दोना पतरी खाना, टाना बाबा टाना ...

सितम्बर 1920 में असहयोग आन्दोलन शुरू कांग्रेस पार्टी का विशेष अधिवेशन कोलकाता (तत्कालीन कलकत्ता) में हुआ था। इस दौरान झारखण्ड के बहुत से राष्ट्रवादियों ने भी हिस्सा लिया था। इसमें लोगों ने गांधीजी से झारखण्ड को आजाद करने का आग्रह किया था। इस पर महात्मा गाँधी ने एक शब्द में उत्तर दिया था—'कपास बोओ, चरखा चलाओ कपडा बुनो छोटा नागपुर आजाद हो जायेगा। गांधीजी की ये बातें टाना भगतों को सबसे अच्छी लगी और गांधीजी के 1920 में रांची आगमन के समय टाना भगतों का एक प्रतिनिधिमंडल महात्मा गाँधी से मिला। उस समय गांधीजी की उपस्थिति में भीम राज बंशीधर मोदी धर्मशाला के सामने लंकाशायर और मैंचेस्टर मीलों के विदेशी कपड़ों की होली जलाई गयी। उस दौरान अन्य लोगों सहित टानाभगतों ने खादी धारण करने का व्रत लिया और चरखा चलाया और वैष्णव टाना भगत दल के सदस्य गांधीजी के शिष्य बन गए। तब से खादी बुनना, पहनना, और पैसा—दो—पैसा जो इनके पास था, उसे गांधीजी को समर्पित करना इनका धर्म बन गया। इन लोगों ने सरकार को टैक्स देना बंद कर दिया। 1940 के रामगढ कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने के लिए टाना भगतों का एक समूह लाला भगत, सोमा भगत, विश्वामित्र भगत और कविया भगत के नेतृत्त्व में पलामू से पैदल चलकर रामगढ़ पहुंचा था। इस दौरान इन्होने गांधीजी को 400 रूपये की थैली भेंट की थी। गांधीजी ने स्वीकार किया कि उनके सारे शिष्यों में टाना भगत सर्वोत्कृष्ट हैं। टैक्स न चुकाने के कारण अंग्रेज सरकार ने इनकी जमीन नीलाम कर दी और अपनी पैत्रिक संपत्ति से इन्हें बेदखल कर दिया। आजादी के बाद भी इनकी ये पुश्तैनी जमीन दूसरों के कब्जे में है और इनके लिए इनका अहिंसात्मक आन्दोलन आज तक जारी है। परन्तु राष्ट्रभक्ति का जो रंग उस पर चढ़ा था वो आज और गाढ़ा हो गया है। आज भी स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस और गाँधी जयंती का समारोह बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। रांची सहित देश के अलग—अलग जगहों में पूरे जोश और उल्लास से टाना भगत इन कार्यक्रमों में शामिल होते हैं और झारखण्ड में कोई भी राष्ट्रवादी कार्यक्रम इनकी भागीदारी के बिना अधूरा होता है।

सत्य और निष्ठा का लिबास ओढ़े यह समाज आज के आधुनिक समाज को जो सन्देश दे रहा है इसे आत्मसात करने में ही हमारा भला हो सकता है। औद्योगिकीकरण और आधुनिकीकरण के पंख पर सवार हमारे देश की जड़ें ऐसे ही व्यक्तियों और समाज के कारण काफी मजबूत है और इसी से बड़े से बड़े प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदाओं को भी सह लेने की ताकत मिलती है। उम्मीद है 21 वीं सदी का ये भारत महात्मा गाँधी और टाना भगतों की राह पर चलते हुए 130 करोड़ की आबादी की सभी सामाजिक—सांस्कृतिक धरोहर को संचित करते हुए उन सभी की आकांक्षाओं और आशाओं को पूर्ण कर सकेगा।

द्वारा : ललितचन्द्र महतो
शोधार्थी : रामचन्द्र, चन्द्रवंशी विश्वविद्यालय
विश्रामपुर, पलामू
मोबा : 95723 41472

संदर्भः—

1. डॉ. रंजन, मनीष , झारखण्ड सामान्य ज्ञान, 2016
2. डॉ तिवारी, राम कुमार, झारखण्ड की रूपरेखा, 2010
3. भारतीय इतिहास के विषय कुछ विषय, भाग—3 एन. सी. ई. आर. टी., 2019
4. प्रो. चन्द्र, बिपिन, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, 2001
5. जनगणना सूची 2011, भारत सरकार
6. सिन्हा, अनुज कुमार, पहचान का संकट, 2019

WANDERING FIRE : AS A HIGH FANTASY

Adv. Dr. Baliram A. Sawant

Abstract:

The present paper attempts to explore the elements of high fantasy in the Guy Gavriel Kay's novel, *The Wandering Fire*. Guy Gavriel Kay is undoubtedly one of the Canadian masters of high fantasy and *The Wandering Fire* is his most enduring work that is written in the tradition of J. R. R. Tolkien. He is an important writer in the realm of fantasy, who has surpassed the boundaries between history and fantasy by creating fictional worlds that are unique and richly realized, yet at the same time draws recognizably on the resonances, culture and folklore of medieval and earlier times. He deliberately uses myth to draw on a wide range of readily identifiable sources to produce a truly innovative re-interpretation of the archetypal battle between the forces of the Light and the Dark. His novels powerfully present people, races, religions, and countries that are caught up in change and conflict.

The Wandering Fire is the second novel of Guy Gavriel Kay's critically acclaimed fantasy trilogy, *The Fionavar Tapestry*, set partly in the contemporary world but mostly in the fictional world of Fionavar. *The Summer Tree* (1984) mainly focuses on the story of Paul and Dave whereas *The Wandering Fire*unravels the shattered life of Jennifer who is tortured by Rakoth Maugrim, the unraveller. In *The Summer Tree*, Brennin suffered under drought which was lifted only through Paul's sacrifice. Now it is in Fionavar an unnatural winter that has lasted for months under the power of a malevolent will, intent on weakening the forces of the light before the true battle comes. Each of five Toronto University students is pushed along a different path as they seek to free Fionavar from winter and fight back against the forces of the Dark.

The Wandering Fire, which follows Tolkien tradition of high fantasy, presents the epic battle between the light and the dark forces. Rakoth Maugrim, the Dark Lord, is the enemy

of the Weaver and of all that is good. A thousand years ago, all the good forces in Fionavar collectively rose against him and after tremendous battle, they defeated and imprisoned him under the mountain, Rangat. But with help of the agents of evil-power, he succeeded to escape and decided to take a revenge on his captivators. Jealous of the weaver's creation, he broke into Fionavar just as the Weaver had completed his work, bringing to the land, horrible disasters, fear, pain, injustice and exploitation in large scale. Since he came outside the Loom, the Weaver has no thread on his Loom and so he cannot be destroyed. His escape sets in motion the events of the trilogy, *The Fionavar Tapestry*.

As high fantasy is set in the otherworld, it deals with the matters, affecting the destiny of that world and revolves around the quest motif. In Guy Gavriel Kay's masterpiece fantasy trilogy *The Fionavar Tapestry*, five university students embark on the journey of self discovery, when they enter the realm of wizards and warriors, gods and mythical creatures. It all begins with the Celtic conference in which five students are introduced to the Mage, Silvercloak who takes them to the heart of the first of all worlds, Fionavar, to attend the festival. In the marvellous land of men and dwarves, of shamans and elves, of wizard and gods, five young men and women soon discover their roles and destiny in the framework of an epic battle between the light and the dark. They get entangled themselves in entirely different world and realize that they must fight to save both the land and themselves. The group of five, ally with the armies of Light to save Fionavar and in the course of their quest, they discover that each possess a special power.

Dave, being located with the Delrai, people of Plains, where he has not only learnt how to fight but captured the attention of the Goddess Ceinwen; Kimberly Ford has transformed into a visionary seer with powers of Baelrath and Ysanne's soul. Paul Schafer has become, known as twice-born after spending three days and nights hung on the summer tree as a voluntary sacrifice, in an attempt to call down the rain, Jennifer Lowel has been raped and tortured by Rakoth Maugrim and is pregnant with the child of the Dark lord. Kevin has remained as loner.

In the second book of the trilogy, *The Wandering Fire*, the five university students are once again drawn back to the Fionavar where the land is shrouded in perpetual winter. The students undertake journey to find out the source of the dreadful winter and ally themselves to extinguish the evil. So *The Wandering Fire* is taken up with the quest and the opening battle of the war. The Divine powers reinforce the force of light in the battle against Dark. Kim, the seer with the Baelrath and gift of Ysanne's soul manifests her power that guards from wild magic. With the visionary power, Kim revives Arthur, the warrior, faces the wild power in Gwen Ystrat and brings her friends out of the Fionavar to the real world.

The Divine powers of Goddess Dana and Mornir work out mysteriously on the side of light force. On Paul's third night on the Summer Tree, a red full moon shone in the sky on a new moon night, as Dana the mother Goddess, granted him release from his guilt, by showing that he had not, in fact, subconsciously willed the accident that had killed his beloved Rachael. Again in the second part, the mysterious power of the god, Mornir saves both Paul and Jennifer from Galadan, the wolflord. Kevin's life-sacrifice to goddess, Dana allows her to intercede and with magic unleashed from his sacrifice that ends the prolonged winter in Fionavar. Dave and Delrei are rescued from evil svart alfar, urgaches, slaugs by first the intervention of Flidais, a diminutive forest power and later on by Ceinwen, green clad goddess of the Hunt. In the course of their journey to Cader Sedat, Paul invokes the sea-god, Liranan who saves them from the monstrous Soulmonger. Fordaetha of Ruk is Ice-Queen of the Barrens in the north works for Maugrim.

Supernatural creatures, belonging to nonhuman races play significant roles in the fantasy. Gavriel Kay has splendidly delineated these marvellous creatures, in *The Wandering Fire* which are brought to life to make the world of fantasy more interesting. Kay has created the fantastic

creatures like dwarves, shamans, lios alfar (light elves), svart alfar (evil elves) flying urgaches, slaugs, swans, wolves, unicorns shadowy horses, the soulmonger, the wild Hunt, shape-shifters, piraiko, the mysterious dog etc.

The Lios Alfars are Light elves who live in the beautiful land of Daniloth which is wrapped in a confusing mist as a protection from Maugrim and others who wish them evil. The notable lios alfar of the past-Lathem mistweaver who wove the sheltering mist and presently Brendel, is the lord of lios alfar. Svart alfar, evil elves are small, loathsome and dispensable dark creatures that eat men and elves. These thousand of Svart alfar are the force of the dark Lord.

The tribe of Delrei is led by its own chieftain, helped by the tribe's Shaman who is ritually blinded in youth better to focus the sight of his inner eye. The third tribe is under the leadership of Ivor dan Bannor and their blind shaman, Gereint, who was blind in his youth. Dwarves, small creatures with elderly appearance are believed to bring good fortune. Brock, a dwarf from Banir works for the force of the light, particularly for Kim. The dwarves dwell in the mountain near the twin peaks of Banir Lok and Banir Tal. Fierce fighters, they have recently been led into questionable acts by Kaen and Blod, who assist Maugrim.

Soulmonger is an enormous sea-creature which guards the castle of Cader Sedat. The soulmonger has been invincible for long time but is eventually killed by Liranan, the Sea-God. Shape-shifting is a magical transformation in which shape-shifters can turn into different creatures or into different sizes at their will. In *The Wandering Fire*, Guy Gavriel Kay has introduced two shape shifters Galadan and Darien, both are andain, an offsprings of mating between god and mortal. Galadan is wolflord of the andain who can take the shape of a malevolent black wolf with splash on its head. The wolflord is the one who seeks the annihilation of this world. Galadan in his metamorphic form of

animal leads the force of wolves.

Magical items provide the characters supernatural power that helps them to perform extraordinary activities. The magical items with such supernatural power are always employed in the modern fantasies. In the trilogy, Kay has made use of different magical instruments such as Baelrath, Owein's Horn, Cauldron De Khath Meigol, Lokdal, Protective Shields, Axes, Arrows, Spears etc.

Baelrath, the Warstone, is the principal magical instrument that has prophetic dreaming power to invoke the dead and to protect the user from wild magic and other evil powers. Dreaming prophetically, Ysanne, an ancient seer found Kim as her right successor and she presented her the Baelrath ring. The Baelrath on the right hand of Kim is very bright and it seems like a thing alive. Kim is blessed with the ring that protects her from the wild magic and evil power. Baelrath helps Kim to invoke Arthur Pendragon to battle against the Dark. The Baelrath also helps Kim to bring all her friends back from Fionavar to their own world.

Owein's Horn is another magical object which awakes Owein and the Kings of the Wild Hunt who lay sleep in the cave of sleepers. Dave with the help of green Goddess of Hunt, Ceinwen, finds a long lost object of power Owein's Horn in Pendaran wood. The Cauldron of Khath Meigol is another magical object which has power to raise the newly dead. Metran, the mage uses the Cauldron to revive the Svart alfar on Cader Sedat when they die. Finally, Loren Silvercloak breaks the spell and Cauldron is shattered into pieces.

The Protective shields that mages use are powerful magical instruments, used as a guard against spells, wild magic, sorcerery or any other dangers. Loren Silvercloak manipulates his shield to protect the Prydwen, the ship from the attack of the soulmonger while Metran uses his shield as protective guard around himself, his sources and the Cauldron of Khath Meigol. Axes, draggers, spears, swords, arrows etc. are general magical items, used in the novel. The axe, kept in the temple at Gwen Ystrat is holy and mysterious and it can be lifted only by the high Priestess, Jaelle.

Soon the company discovers that Metran is fueling his unnatural winter by draining the lives of svart alfar,

resurrecting them again and again using the Cauldron of Khath Meigol. After finding the source, the party sets forth the cursed isle of Cadar Sedat to break the Caauldron of Khath Meigol to fight the source of this power and to free the land of its evil. Finally, Loren Silvercloak breaks the spell. Metran dies and the Cauldron of Khath Meigol gets shattered into pieces. Thus the novel concludes with the victory of the good power over the dark one.

Adv. Dr. Baliram A. Sawant
Assistant Professor,
K. B. P. College, Urun-Islampur
Tal: Walwa
Dist: Sanglir-415409

References:

1) Kay,Guy Gavriel. The Wandering Fire (1986). New York: ROC, 2001.Reprint.

2) Allen, Judy. *Fantasy Encyclopedia*. London: Kingfisher Publication Plc, 2005. Print.

3) Fantasy. Encyclopedia of Fantasy. Edited by John Clute and John Grant. New York: St Martin's Press, 1997.Print.

'आत्मजयी में युगबोधीय चेतना'

– पवन कुमार पाण्डेय (शोधार्थी)

'आत्मजयी' कुँवर नारायण की प्रथम प्रबंधात्मक कृति है। यह रचना कठोपनिषद् पर आधारित है किंतु औपनिषदिक आख्यानों को आधुनिक जीवन के परिवेश के साथ संपृक्त करके वर्तमान जीवन की अन्यान्य श्रेणियों को उद्घाटित किया गया है। उपनिषद् के वस्तुतत्व को अथवा प्रचलित आख्यान को आधार के रूप में ग्रहण किया गया है। कठोपनिषद् में नचिकेता का आख्यान उत्तर वैदिक काल की यज्ञ–बहुल संस्कृति के विरुद्ध आत्मवादी दर्शन को प्रतिष्ठित किया गया है। इसी संदर्भ में स्पष्ट किया गया है कि प्रेय का वरण बुद्धि प्रमाद का परिमाण है, जबकि श्रेय का वरण सार्थक जीवन की उपलब्धि के लिए जागृत–चेतना और नीर–क्षीर विवेक का प्रतिपादन होता है। कुँवर नारायण जी कहते हैं कि–'आत्मजयी' में उठाई गई समस्या मुख्यतः एक विचारशील व्यक्त की समस्या है। कथानक का नायक नचिकेता मात्र सुखों को अस्वीकार करता है, तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति भर ही उसके लिए पर्याप्त नहीं। उसके अंदर एक बृहत्तर जिज्ञासा है जिसके लिए केवल सुखी जीना काफी नहीं सार्थक जीना जरूरी है।'[1]

'आत्मजयी' उपनिषद् पर आधारित होने के बावजूद अपने सम–सामयिक काल–बोध से प्रेरित है। वर्तमान युग का पीढ़ी–संघर्ष प्राचीन रूढ़ियों और नवीन जीवन मूल्यों की टकराहट, भौतिक उपलब्धियों की मृग–मरीचिका और आध्यात्मिक मूल्यों का तुलनात्मक विश्लेषण, सुखी एवं सार्थक जीवन की व्याख्या, व्यक्ति चेतना और पारंपरिक रूढ़ि का द्वंद्व, अंधानुकरण और वैज्ञानिक दृष्टि के बीच का टकराव, सार्थक जीवन और ग्रहणीय उदात्त–जीवन मूल्यों के रेखांकन का कार्य इस खंडकाव्य में बड़ी कुशलता से किया गया है।

कठोपनिषद् से लिए गए नचिकेता के कथानक

को कुँवर नारायण ने आधुनिक जीवन मूल्यों के संदर्भ में देखा है न कि पौराणिक कथा के आलोक्य में। जिज्ञासु बालक नचिकेता ने देखा के पिता वाजश्रवा यज्ञ विधान हेतु ब्राह्मणों को दान देने के लिए दो हजार बूढ़ी गाएँ लाये हैं। ये बूढ़ी गाएँ दान की दृष्टि से निरर्थक एवं प्रयोजन हीन हैं। उसके मन में यज्ञ की पद्धति एवं दान के औचित्य पर प्रश्न उठता है। इस के संदर्भ में कठोपनिषद् का यह श्लोक प्रासंगिक है –

पीतोदका दग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाः ।
अनंता नाम ते लोका स्माद स गच्छति ता ददत्त।।[2]

विचारशील नचिकेता के मन में कई सवाल उठते हैं, वह अनंत जिज्ञासाओं के प्रति उत्तरों की तलाश का साधन ढूँढ़ता है, भले ही उसे इसके लिए अनेकानेक कठिनाइयों से गुजरना पड़े। इसके लिए नचिकेता समस्त लौकिक जगत की सुख–सुविधाएँ न्योछावर करने के लिए तैयार है। इस प्रकार की गायों के दान का उद्देश्य क्या है, पिता वाजश्रवा उसे बताता है कि यह यज्ञ का विधान है, हम जो दान करते हैं उससे श्रेष्ठतर हमें कुछ प्राप्त होता है। इस व्यवसाय की वृत्ति पर चिंता जताते हुए नचिकेता प्रस्ताव करता है कि हमें किसी को दान में देकर मुझसे श्रेष्ठतर कुछ मांग लीजिए।

‘तुम जिन वस्तुओं को प्रिय या अप्रिय कहते
यदि केवल उनमें हूँ
तो मुझे भी त्याग कर
मुझसे श्रेष्ठतर कुछ माँगो।’[3]

नचिकेता पूछता है कि मुझे किसे देंगे? नचिकेता के इस तर्कपूर्ण प्रश्न को सुनकर बार–बार आग्रह करने पर वाजश्रवा झल्ला जाता है। उसकी झल्लाहट का एक बड़ा मनोवैज्ञानिक कारण था कि नचिकेता के प्रश्नों का उसके पास तर्कसंगत उत्तर नहीं था। वह नचिकेता के तर्कों से आहत था। किंतु पारंपरिक जड़ता से वाजश्रवा पूरी तरह आबद्ध था। उसे जब कोई उत्तर नहीं सूझता, तो वह अपना बौद्धिक संतुलन खोकर क्रोधावेश में कह देता है–‘मृत्यवे त्वाम् ददामि!’– अकस्मात् वज–वाक्य

क्रुद्ध वाजश्रवा के वे क्रोध से धड़कते शब्द,
नचिकेता के कोमल अन्तस् पर
छाप–सी झुलस आयी–‘मृत्यवे त्वाम् ददामि....’[4]

अर्थात् मैं तुम्हें मृत्यु को देता हूँ। पिता के आदेश को शिरोधार्य करते हुए नचिकेता सत्यान्वेपण से लालायित यम के द्वार पर पहुँचता है। वहाँ भूख–प्यास से व्याकुल वह तीन दिन तक यमराज के लौटने की प्रतीक्षा करता है। यम के वापस आने पर अतिथि असत्कार की अनुभूति होने पर वे नचिकेता को तीन वर माँगने को कहते हैं। इस संदर्भ में कुँवर नारायण कहते हैं–”पहला यह कि वाजश्रवा का नचिकेता के प्रति क्रोध शांत हो, दूसरा यज्ञों की नचिकेताग्नि, तीसरा मृत्यु के रहस्य का उद्‌घाटन। मैंने ‘आत्मजयी’ में पहले और तीसरे वरदान के आधार पर ही जीवन संबंधी कुछ धारणाओं पर विचार किया है।’[5]

कुँवर नारायण ने ‘आत्मजयी’ में पहले और तीसरे वरदान के आधार पर जीवन संबंधी अवधारणाओं को रेखांकित किया है। वैदिक कालीन चिंतन प्रवृत्ति वस्तुवादी घटकों से प्रेरित है जिसका पोपक वाजश्रवा है और नचिकेता आत्मपक्ष की गहरी संस्कृति से प्रेरित है। उसका चिंतन आत्मबोध को व्यापक एवं जीवनबोध के प्रति सजग बनाता है। ये वैचारिक मूल्य जीवन के प्रति सार्थक दृष्टि देते हैं। कुँवर नारायण अध्यात्म, धर्म–दर्शन द्वारा युगबोधीय परिदृश्यों में नवीन संवाद–दृष्टि अपनाते हैं। जो मानव जीवन के बृहत्तर समाज निर्माण के साधन के रूप में प्रशस्त होती है। आत्मजयी में नचिकेता भौतिक सुखों को सार्थक नहीं मानता है। इसीलिए यम के द्वारा दिए गए अन्यान्य प्रलोभनों को वह स्वीकार नहीं करता है। वह बार–बार अपने भीतर उठने वाले आध्यात्मिक प्रश्नों के प्रति आग्रहशील बना रहता है। अंततः नचिकेता जीवन मृत्यु के मार्मिक रहस्य को आत्मसात करता है। ऐंद्रिक सुखों की अपेक्षा आत्मज्ञान की प्रबल चेतना को स्वीकार करता है।

नचिकेता मूल्यवान जीवन की सार्थक उपस्थिति में रचनात्मक दृष्टिकोण और सार्थक प्रयोजन की दृष्टि

देता है। कविवर कुँवर नारायण ने 'आत्मजयी' को प्रासंगिक जीवनबोध से जोड़कर देखने के लिए उसमें आवश्यक परिवर्तन भी किया है। जैसे पिता के श्राप से नचिकेता मरता नहीं, बल्कि जल में डूबने से पहले ही उसे निकाल लिया जाता है और स्वप्नलोक में यमराज से साक्षात्कार कर आत्मतत्व के विश्लेषण का ज्ञान प्राप्त करता है। नचिकेता के संदर्भ में पंकज चतुर्वेदी लिखते हैं—'नचिकेता पुरातन पंथ के वर्चस्व, धार्मिक कट्टरता, बहुमत की तानाशाही और मुख्यधारा के आततायी उल्लास के बरअक्स एक उदात्त, संवेदनशील और मुक्तिधर्मी मनुष्य सत्य की तलाश करता है।[6] नचिकेता यम के समक्ष मसलन जीवन—मृत्यु, आत्मा जैसे शाश्वत प्रश्नों से जूझता है। इसीलिए नचिकेता की सत्यनिष्ठा और अपरिग्रह से प्रभावित होकर यम उसे आत्मतत्व का दुर्लभ ज्ञान देते हैं। नचिकेता की अमर—जीवन जिज्ञासा के संदर्भ में कविवर को कुँवर नारायण लिखते हैं— 'अमर जीवन' से तात्पर्य उन अमर—मूल्यों से है जो व्यक्ति—जगत् में अतिक्रमण करके सार्वकालिक और सार्वजनीन बन जाते हैं।'[7]

कुँवर नारायण की काव्य यात्रा नई कविता के दौर से शुरू हुई थी। उनकी कविताओं का भावबोध वैदिक कालीन, बौद्ध संस्कृति, इतिहास और युगीन जीवन मूल्यों के अन्यान्य सरणियों के प्रासंगिक बोध को प्रस्तुत करती हैं। काव्य पक्ष में कल्पना, अनुभूति, संवेदना, विचार एवं भाषा जैसे पक्ष वैचारिक प्रतिक्रियाओं के साधन के रूप में उपस्थित हैं। आपका अनुभव मानव नियत के दार्शनिक पक्ष पर टिका है, पर यह दार्शनिकता ठोस मानवीय स्थितियों के रूप में जुड़ी है। आत्मजयी की भूमिका में कुँवर नारायण जी ने इन बातों का उल्लेख किया है— 'नचिकेता और वाजश्रवा की असहमति, तथा वाजश्रवा का क्रोध में नचिकेता को मृत्यु को देना, न केवल नई और पुरानी पीढ़ी के संघर्ष का प्रतीक है बल्कि उन वस्तुपरक वैदिक और आत्मपरक उपनिपदत्वकालीन दृष्टिकोणों का भी प्रतीक है जिसका एक रूप हम अपने आज के जीवन में भी पाते हैं।[8] इसका व्यावहारिक रूप भी हम जीवन में घटित होते हुए पाते हैं। कवि की बौद्धिक उपस्थिति मानव जीवन को सोद्देश्यपूर्ण ढंग से आलोकित करती है। कुँवर नारायण नचिकेता के माध्यम से जीवन मूल्यों की खोज करता है। आत्मजयी में नचिकेता निराशा एवं गहरे मानसिक चिंतन में उलझा है। वह भौतिकता एवं जीवन की नश्वरता से वाकिफ है।

नचिकेता की चेतना लोकमंगल की उस सिद्धावस्था से है, जहाँ भौतिक प्रलोभन निरर्थक है। वह एक बड़े तथ्य की ओर संकेत करता है कि स्वर्ग की कल्पना के पारंपरिक बोध के कारण वर्तमान जीवन की दायित्वपूर्ण स्थितियों से विमुख होकर भविष्य के आकाश कुसुम को पाने की इच्छा करने लगता है। कुँवर नारायण इस बात को रेखांकित करते हैं कि भविष्य वर्तमान के कार्यों पर ही निर्भर करता है। भविष्य का मूलाधार वर्तमान ही है। हम आज जो कुछ करते हैं उसका परिणाम भविष्य है। इसीलिए नचिकेता कहता है कि —

मनुष्य स्वर्ग के लालच में
अकसर उस विवेक तक की बलि दे देता है
जिस पर निर्भर करता
जीवन का वरदान लगना।[9]

सारांशत : कहा जा सकता है कि आत्मजयी का विषय पौराणिक होने पर भी वस्तुतत्व की दृष्टि से आधुनिक युगबोधीय चेतना का संवाहक है। वर्तमान जीवन के अन्यान्य जटिल प्रश्नों को नचिकेता के माध्यम से इसमें उठाया गया है। भौतिकवाद के प्रति नित्य विकसित हो रही भोगवाद की अपसंस्कृति हमारे वर्तमान समाज को मूल्यहीन बनाती जा रही है। ऐसी स्थिति में आत्मिक मूल्यों का अनुसंधान और श्रेयधर्मी जीवन शैली की पुर्नस्थापना आज की अनिवार्यता है। इसी महत्वपूर्ण प्रश्न को कुँवर नारायण ने पूरी संसक्ति के साथ उठाया है। इसीलिए कहा जा सकता है कि आत्मजयी की संप्रेषण वस्तु वर्तमान संदर्भो में सार्थक जीवन की खोज और प्रतिष्ठा ही है। यह रचना जहाँ

एक ओर मिथकीय आधार को लेकर अतीत की सांस्कृतिक चेतना से परिचित कराती है। वहीं दूसरी ओर वर्तमान जीवन की भयानक विभीषिका को विश्लेषण करके सार्थक जीवन शैली का दिशा–दर्शन कराती है।

शोधार्थी
मुंबई विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालय
गुरुनानक खालसा कॉलेज,माटूंगा
(पूर्व) मुंबई
महाराष्ट्र–400019

संदर्भः–

1. कुँवर नारायण, आत्मजयी, पृ. 5
2. कठोपनिषद, 1/1/3
3. कुँवर नारायण, आत्मजयी, पृ. 29
4. वही, पृ. 30 5. वही, पृ. 9
6. जीने का उदात्त आशय, पंकज चतुर्वेदी, पृ.117
7. कुँवर नारायण, आत्मजयी, पृ. 5
8. वही, पृ. 9 9. वही, पृ. 27

गीता एवं योग–सूत्र में ईश्वर का स्वरूप

– मनोज कुमार[1]
– सुरेन्द्र कुमार[2]

संसार में जब हम दृष्टिपात करते हैं तो मनुष्य के द्वारा किया गया कोई भी कार्य ऐसा दिखाई नहीं पड़ता जिसका कोई करने वाला न हो। संसार का नियम है कि प्रत्येक कार्य को करने वाला कोई न कोई अवश्य है। इसलिए प्रश्न उत्पन्न होता है कि यह जो विचित्र संसार है, संपूर्ण ब्रह्मांड है तो क्या यह किसी की कृति नहीं है ? सभी चिंतकों ने ईश्वर को इस सृष्टि का, संपूर्ण ब्रह्मांड का रचनाकार माना है। उसे ही सृष्टि का पालनकर्ता व संहारकर्ता कहा है। ईश्वर एक ऐसा तत्व है, जिसे सामान्यतः कोई नकार नहीं सकता। भिन्न–भिन्न मतावलंबियो ने भिन्न–भिन्न शास्त्रों में ईश्वर के स्वरूप की अपने मतानुसार चर्चा की है किंतु ईश्वर के स्वरूप की चर्चा जिस प्रकार प्रमाणिक रूप से गीता एवं योग–सूत्र में की गई है वैसी अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलती।

वैदिक साहित्य में ईश्वर को ऐश्वर्यवान, शक्ति–संपन्न, योग्य, समर्थ, मालिक, स्वामी आदि नामों से पुकारा गया है। स्वामी दयानंद भी ईश्वर को सच्चिदानंद स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वांतर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता कहते हैं। वेदों एवं स्वामी दयानंद की भांति ही गीता में भी ईश्वर को अक्षरब्रह्म का नाम देते हुए कहा है कि वही समस्त प्राणी तथा पदार्थों की उत्पत्ति करने वाला अर्थात सृष्टि–व्यापार चलाने वाला है, वही कर्म है, वही जगत की स्थिति एवं नाशवान पदार्थों का सचेतन अधिष्ठाता पुरुष है तथा वही अधिदैव अर्थात ईश्वर है।

योग–सूत्र में ईश्वर के स्वरूप को और अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया गया है योग–सूत्रकार कहते हैं कि ऐसा पुरुष (आत्मा) विशेष, जो क्लेशों, शुभाशुभ कर्मों, कर्म फलों एवं कर्म संस्कारों से असंपृक्त है, वहीं पुरुष विशेष योग–सूत्र में ईश्वर कहा गया है। आगे योग–सूत्र में वर्णन मिलता है कि वह ज्ञान का क्षयरहित भंडार है, वह गुरुओं का भी गुरु है और उसका सर्वोत्तम नाम 'ओम' है। इस प्रकार हम देखते हैं कि गीता और योग–सूत्र में ईश्वर के स्वरूप की बड़ी ही प्रमाणिक चर्चा की गई है।

प्रस्तावना

वैदिक वांग्मय में ईश्वर तत्व की चर्चा पर्याप्त मात्रा में देखने को मिलती है। यथा वेद, उपनिषद, ब्राह्मण, आरण्यक, दर्शन आदि अनेक अध्यात्मिक ग्रंथ ईश्वर तत्व से भरे पड़े हैं। जब समस्त जगत का निर्माता ईश्वर ही है और वही कण–कण में व्याप्त है तथा समस्त व्यवस्था ही ईश्वर की है तो ईश्वर तत्व से कोई ग्रंथ क्यों ही रिक्त रह पाएगा ? परंतु इस शोध–पत्र में केवल गीता एवं योग–सूत्र में ईश्वर के स्वरूप को प्रकाशित करना ही ध्येय है। गीता एवं योग–सूत्र में ईश्वर का स्वरूप

व्यक्त करने से पहले हम 'ईश्वर' शब्द पर विचार कर लेते हैं।

'ईश ऐश्वर्ये' धातु से अष्टाध्यायी के 'वरच' प्रत्यय लगाकर ईश्वर शब्द निष्पन्न हुआ है । ईश्वर शब्द का अर्थ होता है ऐश्वर्यवान, शक्ति–संपन्न, योग्य, समर्थ, मालिक, स्वामी आदि। सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में महर्षि दयानंद जी लिखते हैं कि (ईश ऐश्वर्ये) इस धातु से ईश्वर शब्द सिद्ध होता है। 'य ईष्टे सर्वेश्वर्यवान वर्तत्ते स ईश्वरः' जिसका सत्य, विचारशील, ज्ञान और अनंत ऐश्वर्य है। इससे उस परमात्मा का नाम 'ईश्वर' है। महर्षि दयानंद आर्य समाज के दूसरे नियम में लिखते हैं कि "ईश्वर सच्चिदानंद स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वांतर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है।" उसी की उपासना करने योग्य है।[6]

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के आठवें मंत्र में भी इसी नियम की पुष्टि प्राप्त होती है यथा अपर्यगात अर्थात् वह सब स्थानों पर पहुंचा हआ है। शीघ्रकारी है, शुद्ध है, सर्वशक्तिमान है, (अकायम) अर्थात् स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर से रहित है। नाड़ियों से रहित है, अविद्यादि दोषों से रहित होने से सदा पवित्र और पाप से रहित है, वह सर्वज्ञ है, सब जीवों के मनो की वृत्तियों को जानने वाला, परिभू, दुष्ट–पापियों का तिरस्कार करने वाला और अनादि स्वरूप, जिसके संयोग से उत्पत्ति और वियोग से विनाश अर्थात् माता–पिता, गर्भवास, जन्म, वृद्धि और मरण नहीं होते। वह परमात्मा शाश्वत अर्थात् सनातन अनादि स्वरूप अपने–अपने स्वरूप से उत्पत्ति और विनाश रहित, समस्त जीवों के लिए यथार्थ भाव रखने वाला, जो अपने ज्ञानानुसार सभी पदार्थों को बनाता है। वही ऐसा परमेश्वर उपासना करने योग्य है।

उपनिषद् में इसी ईश्वर को ब्रह्म नाम से कहा है। कठोपनिषद् में यमाचार्य शिष्य नचिकेता को कहते हैं कि उस ब्रह्म को वाणी, मन, आंखों से प्राप्त नहीं किया जा सकता परंतु वह है अवश्य, तो फिर उसको किस उपाय से पाया जा सकता है ? इसी उपनिषद् में ईश्वर पर गंभीर चिंतन करते हुए यमाचार्य कहते हैं कि वह 'है या नहीं है' इन दोनों बातों पर विशेष विचार करना है। इन्हीं दोनों बातों पर तात्विक विवेचना करके 'अस्ति इति' वह है। यह धारणा बनाकर ही उसे प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार ईश्वर का चिंतन करना और उसे प्राप्त कर मनुष्य द्वारा अपना परम और चरम लक्ष्य को प्राप्त करना ही धर्म है। क्योंकि मनुष्य जन्म प्राप्त करके भी यदि ईश्वर को नहीं समझा तो मनुष्य का जन्म लेना ना लेना बराबर है।

केनोपनिषद् में कहा भी गया है कि अगर तूने इस जन्म में ईश्वर को जान लिया तब तो ठीक है और यदि नहीं जाना तो विनाश ही विनाश है अर्थात महानाश है। धीर पुरुष संसार को एक–एक भूत, एक–एक पदार्थ, जड़ तथा चेतन के विषय में चिंतन करके इसी निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि मूल तत्व वही है । उसे प्राप्त करने के पश्चात ही पूर्ण शांति की प्राप्ति हो सकेगी।[10]

इसलिए वर्तमान समय में ईश्वर के विषय एवं आध्यात्मिक चिंतन के अतिश्रोत ग्रंथ गीता एवं योग दर्शन प्रचलित है। इन ग्रंथों में ईश्वर को सरल एवं सुबोध भाषा में समझाया गया है। इसीलिए हमने यहां गीता एवं योग–दर्शन में ईश्वर का स्वरूप शोध–पत्र लिखने का लक्ष्य बनाया है।

वैसे तो ईश्वर तत्व भारतीय वांग्मय में अनेक स्थानों पर देखने को मिलता है। अनेक वेद–वेदांग, उपनिषद, आरण्यक ईश्वर तत्व से भरे पड़े हैं परंतु हमारा ध्येय यहां गीता और योग–सूत्र में ईश्वर के स्वरूप को प्रकाशित करना है।

श्रीमद्भगवद्गीता में ईश्वर का स्वरूप

श्रीमद्भगवद्गीता के चतुर्थ अध्याय के चौबीसवें श्लोक में अनेक तत्वों को ब्रह्म के रूप में व्यक्त किया गया है और कहा है कि ब्रह्म ही जिसका सर्वस्व है यथा अर्पण करने का साधन–स्रवा आदि भी ब्रह्म है। हवि भी ब्रह्म, यजमान भी ब्रह्म, अग्नि भी ब्रह्म, आहुति देना, रूप

क्रिया भी ब्रह्म है। इस प्रकार अग्नि–रूपी ब्रह्म में ब्रह्म द्वारा ही हवन किया गया है । उस ब्रह्म रूपी कर्म में स्थित रहने वाला फल भी ब्रह्म ही है। अतएव अहं को ब्रह्म में लीन करने वाला भी ब्रह्म ही है।[11]

ईश्वर एक ऐसा गूढ़ एवं व्यापक विषय है, जिसको शब्दों के माध्यम से प्रकट या व्यक्त करना अत्यंत कठिन है। ईश्वर अनुभव का विषय है, इसे अनुभव द्वारा ही ग्रहण किया जा सकता है। परंतु श्रीमद्भगवद्गीता में शब्दों के माध्यम से ईश्वर–तत्व को स्पष्ट करने का यथा संभव प्रयास किया गया है।

श्रीमद्भगवद्गीता के चौथे अध्याय के श्लोक संख्या चौबीस में श्री भगवान स्वयं घोषणा करते हैं कि सबसे परम व उत्कृष्ट तथा नष्ट न होने वाला तत्व (अक्षर) ही ब्रह्म है। अर्थात् इस संपूर्ण सृष्टि के निर्माण व विध्वंस का हेतु एवं सभी दृश्य जगत का मूल निमित्त ब्रह्म ही है। प्रत्येक प्राणी का मूल स्वरूप 'अध्यात्म' कहलाता है।[12] अक्षर ब्रह्म के निमित्त प्राणियों तथा पदार्थों (चराचर) की उत्पत्ति करने वाला अर्थात् सृष्टि–व्यापार है। वह 'कर्म' है, संपूर्ण नाशवान, नामरूप जगत की स्थिति 'अधिभूत' है और नामरूपधारी नाशवान पदार्थों में जो सचेतन अधिष्ठाता पुरुष है, वही 'अधिदैव' है। हे देहधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन ! इस देह में मैं (पुरुषोत्तम) ही 'अधियज्ञ' हूँ।[13]

गीता के आठवें अध्याय के श्लोक संख्या चतुर्थ में श्री भगवान कहते हैं – हे गुड़ाकेश ! आज एक ही स्थान पर सब चराचर जगत को मेरे इस विश्वरूप में देख लो और इससे अन्य जो कुछ भी देखने की लालसा हो, वह भी मेरी इस देह में दर्शन कर लो।[14] गीता के अध्याय ग्यारहवें के श्लोक संख्या पंचम में श्री कृष्ण कहते हैं – हे पार्थ ! मेरे अनेक प्रकार के विभिन्न रंगों और अनेक आकारों के इन सैकड़ों–सहस्रों दिव्य स्वरूपों को देखो।[15]

ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में भगवान के विश्व रूप का वर्णन प्राप्त होता है जिसमें वह सहस्रों सिर वाला, सहस्त्रों आँखों वाला व सहस्रों पैरों वाला है। वह भूमि (संपूर्ण विश्व) को चारों तरफ से लपेटकर दशांगुल (दसों अंगुल) अर्थात् पूरा का पूरा बाहर ही ठहरा हुआ है।[16] ऋग्वेद में पुनः भगवान को सब ओर आंखों वाला, सब ओर मुख वाला, सब ओर बाहुओं और पैरों वाला कहा गया है। वह एक सर्वशक्तिमान, परमात्मा समस्त जगत को उत्पन्न करने हेतु अपने भुजबल से पाद शक्ति (ताड़न–शक्ति) से आंदोलित करता है।[17]

योग–सूत्र में ईश्वर का स्वरूप

महर्षि पतंजलि समाधि पाद के सूत्र संख्या तेइसवें में ईश्वर के स्वरूप का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि समाधि की प्राप्ति हेतु ईश्वरप्रणिधान अत्यावश्यक तत्व है। अनन्य प्रेम पूर्ण ईश्वर उपासना करना अर्थात् ईश्वर को ही समस्त पदार्थों का स्वामी मानकर सभी कर्म ईश्वर को समर्पित करके ईश्वरीय आज्ञा के अनुकूल आचरण करना आदि ईश्वरप्रणिधान के अंतर्गत आता है ।[18]

पतंजलि योग–सूत्र के प्रथम पाद के अगले ही सूत्र में ईश्वर के स्वरूप का वर्णन करते हुए योगसूत्र कार कहते हैं कि जो पंच क्लेशो (अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष तथा अभिनिवेश) तथा शुभ–अशुभ कर्मों तथा उनके फल सुख–दुख व उनके भोग संस्कार (वासनाओं) आदि से पूर्ण रूप से संबंध रहित है तथा जो जीवों से भिन्न स्वभाव वाला (चेतन विशेष) पुरुष है वह ईश्वर कहलाता है।[19]

मुंडकोपनिषद् में भी इस विषय में उल्लेख प्राप्त होता है कि–यह आत्मा उपदेश, मेधा (बुद्धि) तथा प्रवचनों द्वारा प्राप्य नहीं है। यह जिसका वरण करता है, उसके द्वारा ही प्राप्त करने योग्य है। अर्थात् यह (आत्मा) केवल उसके लिए ही अपने स्वरूप को उद्घाटित करता है, जिसे यह स्वयं चुनता है।[20]

योग–सूत्र में पुनः उल्लेख मिलता है कि जिससे विराट कोई अन्य पदार्थ या वस्तु न हो वह निरतिशय कहलाता है क्योंकि ईश्वर ही ज्ञान की अवधि है। यही सर्वज्ञता का बीज रूप है। इसी के ज्ञान का विस्तार होकर ऐसी स्थिति में पहुँच जाता है, जिससे बढ़कर

अन्य कोई ज्ञान नहीं हो सकता। जिस प्रकार वह (ईश्वर) ज्ञान की पराकाष्ठा है, ठीक उसी प्रकार धर्म, यश, ऐश्वर्य, वैराग्य, कल्याण तथा मोक्ष आदि की पराकाष्ठा का आधार भी उस सर्वव्यापक (ईश्वर) को ही मानना चाहिए।[21]

पुनः योग–सूत्रकार अगले सूत्र में स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि वर्तमान में जो गुरु है तथा भविष्य में जो गुरु होंगे उन सभी का गुरु ईश्वर ही है क्योंकि ईश्वर प्रदत्त विद्या के अभाव में कोई भी जीवधारी स्वभाविक ज्ञान से व्यव्हार–सिद्धि तथा मोक्ष प्राप्ति नहीं कर सकता। देहधारी गुरुओं तथा सृष्टि–रचना को देखकर जो ज्ञान प्राप्त होता है, वह ज्ञान भी परंपरा द्वारा ईश्वर से ही प्राप्त हुआ है। वह ईश्वर भूत, वर्तमान तथा भविष्य में उत्पन्न होने वाले सब गुरुओं का गुरु है अर्थात् विद्या प्रदान करने वाला है। काल के द्वारा नष्ट न होने से वह ईश्वर सभी गुरुओं का गुरु कहलाता है।[22]

ईश्वर के विषय में योग–सूत्र में पुनः वर्णन प्राप्त होता है कि उस ईश्वर का वाचक शब्द प्रणव अर्थात् 'ओम' है। यही परमेश्वर का प्रमुख नाम है। इस शब्द से उसके स्वरूप विस्तार का वर्णन प्राप्त होता है। उसके ध्यानार्थ शब्द के छोटा होने से ओम का उच्चारण सरल हो जाता है। ईश्वर में विद्यमान गुणों के द्वारा की जाने वाली उपासना, स्तुति, प्रार्थना आदि 'सगुण' तथा अविद्यमान गुणों के द्वारा की जाने वाली उपासना एवं प्रार्थना निर्गुण कहलाती है।[23]

महर्षि पतंजलि योग–सूत्र में उल्लेख करते हुए कहते हैं कि उस प्रणव का (ओम, ईश्वर वाचक) जप (पुनः–पुनः उच्चारण) अथवा स्मरणादि करना अनिवार्य रूपेण माना है। क्योंकि उस प्रणव का जप करने से तथा उसके अर्थ की भावना करने से योगी (साधक) का चित्त एकाग्र हो जाता है।[24]

वेद में भी ईश्वर को स्मरण करने का विधान प्राप्त होता है यथा हे कर्मशील जीव ! ओम नाम का जप अर्थात स्मरण कर।[25]

योग–सूत्रकार वर्णन करते हुए बताते हैं कि उस ईश्वर की भक्ति, उपासना, स्मरण आदि नियमित रूप से करने पर सहसा ही चेतन–आत्मा की प्राप्ति हो जाती है। इसलिए जीवात्मा दोनों को जानने में समर्थ हो पाता है तथा इसी सत्संग के परिणामस्वरूप योग–साधना में उपस्थित होने वाले समस्त विघ्नों–उपविघ्नों का निराकरण हो जाता है।[26]

योग–सूत्र के सूत्र संख्या बत्तीसवें में पुनः उल्लेख मिलता है कि योग–साधना में उपस्थित होने वाले विघ्नों–उपविघ्नों आदि से छुटकारा पाने हेतु साधक को उस एक–तत्व का दृढ–अभ्यास अर्थात् ईश्वरप्रणिधान का ही अनुष्ठान करना चाहिए।[27]

उपसंहार

संपूर्ण आलेख पर दृष्टिपात करने के पश्चात निष्कर्षतः गीता एवं योग–सूत्र में ईश्वर का स्वरूप के अनुसार कुछ मुख्य बिंदु ध्यातव्य है जो इस प्रकार है – यह संपूर्ण जगत् ईश्वर से ही ओतप्रोत है तथा इसका समस्त सृष्टि व्यापार उसी विराट शक्ति द्वारा संपादित होता है। अतः उसी सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान की स्तुति व उपासना करने योग्य है।

प्रणव अर्थात ओम् उस परमात्मा का मुख्य नाम है। जब साधक ईश्वर को सगुण और निर्गुण दोनों प्रकार से जान लेता है तो उसकी उपासना, प्रार्थना सरल हो जाती है।

अतः उपर्युक्त वर्णन के आधार पर हम कह सकते हैं कि ईश्वर के स्वरूप की जैसी प्रमाणिक और व्यवहारिक चर्चा गीता एवं योग–सूत्र में प्राप्त होती है, वैसी कहीं अन्यत्र देखने को नहीं मिलती। वेदों एवं दर्शनों के ईश्वर संबंधी विचारों को गीता एवं योग–सूत्र ने बड़ा ही सुगम एवं व्यवहारिक स्वरूप प्रदान किया है।

संदर्भः–

1. शोध–छात्र योग विज्ञान विभाग गुरुकुल काँगड़ी समविश्वविद्यालय, हरिद्वार।
2. संकाय एवं विभागाध्यक्ष योग विज्ञान विभाग गुरुकुल काँगड़ी समविश्वविद्यालय, हरिद्वार।
3. पाणिनीय धातुपाठ अदादिगण पृष्ठ–24 कॉलम–2 प्रकाशन रामलाला कपूर ट्रस्ट, पोस्ट बहालगढ़, सोनीपत (हरियाणा)।
4. संस्कृत–हिंदीकोश लेखक वामन शिवराम आप्टे, पृष्ठ संख्या – 180 कालम–1 प्रकाशक चौखंबा विद्याभवन चौक, बैंक ऑफ बड़ौदा भवन के पीछे पोस्ट बॉक्स नंबर–1069 वाराणसी–221001
5. सत्यार्थ प्रकाश के लेखक महर्षि दयानंद पृष्ठ–21 प्रकाशक आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, मुख्यालय – 427 गली मंदिर वाली, नयाबांस दिल्ली–110006
6. महर्षि दयानंद कृत, आर्य समाज का दूसरा नियम ।
7. स पर्यगाच्छक्रमका यभव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम् ।
   कविर्मनीणी परिभूः स्वयम्भूर्याताथ थ्यतोर्थान व्यदधाच्छाश्वती भ्यरू समाभ्यः।। यजुर्वेद 40/8
8. "नैव वाचा न मनसा प्राप्तुं शक्यो न चक्षुषा ।
   अस्तीति ब्रुवतोऽन्यत्र कथं तदुपलभ्यते।।

   कठोपनिषद् 2/3/12
9. अस्तीत्येवोपलब्धव्यस्तत्त्वभावेन चोभयोः ।
   अस्तीत्येवोपलब्धस्य तत्त्वभावः प्रसीदति।।

   कठोपनिषद्कठोपनिषद् 2/3/12
10. इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः ।

    भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति केनोपनिषद् 2/5
11. ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।
    ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ।। गीता 4/24
12. अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते ।
    भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः।। गीता 8/3
13. अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम् ।
    अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर ।। गीता 8/4
14. इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम् ।
    मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद्रष्टुमिच्छसि ।। गीता 11/7
15. पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः।
    नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च ।। गीता 11/5
16. सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
    स भूमिं विश्वतोवृत्वात्यतिष्ठदशांगुलम्।। ऋग्वेद 10/90/1
17. विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् ।
    सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैवाभूमी जनयन्देव एकः।।
    ऋग्वेद 10/81/3
18. ईश्वरप्रणिधानाद्वा ।। पाल्यो सू. 1/23
19. क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः ।।
    पाल्यो सू. 1/24
20. नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन।
    यमेवैष वृणते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा वृणुते तनूं स्वाम् ।। मु.उ.3/2/3

21 तत्र निरतिशयं सर्वज्ञबीजम् ।। पा.यो.सू. 1/25

22 स एषः पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्।।
पा.यो.सू. 1/26

23 तस्य वाचकः प्रणवः।। पाल्यो सू. 1/27

24 तज्जपस्तदर्थभावनम् ।। पाल्यो सू. 1/28

25 ओम क्रतो स्मर । यजुर्वेद 40/15

26 ततः प्रत्यक्चेतनाधिगमोऽप्यन्तरायाभावश्च।।
पा.यो.सू. 1/29

27 तत्प्रतिषेधार्थमेकतत्त्वाभ्यासः।। पाल्यो सू. 1/32

पुलिस तंत्र की विसंगतियों के प्रति बुलाकी शर्मा की व्यंग्य दृष्टि

– निर्मल कुमार रांकावत

स्वाधीनता प्राप्ति के उपरांत भी भारतीय पुलिस विभाग में ब्रिटिशयुगीन वर्चस्व भावना और प्रशासनिक विद्रूपताओं के रहते आज अनेक लोग पुलिस को 'रक्षक' के स्थान पर 'भक्षक' की भूमिका में देखने लगे हैं। हरिशंकर परसाई, लतीफ घोंघी प्रभृति वीसियों व्यंग्यकारों ने पुलिस महकमें में भ्रष्टाचार की घिनौनी महक पर तीव्र कटाक्ष किए हैं। हिन्दी एवं राजस्थानी भाषाओं में समान अधिकारपूर्वक सतत् व्यंग्य लेखनरत श्री बुलाकी शर्मा के व्यंग्य लेखों में पुलिस तंत्र की विसंगतियों को विभिन्न कोणों से उजागर किया गया है। पुलिस और लाल गुलाब तथा 'लीक छोड़ पुलिस चले' जैसे शीर्षकयुक्त व्यंग्यलेख तो सीधे तौर पर ही पुलिस केन्द्रित ही है। उनके अन्य व्यंग्य लेखों में भी पुलिस विभाग की 'अव्यवस्था' का अत्यन्त मर्मस्पर्शी

निरूपण हुआ है। पुलिस विभाग के गैर जिम्मेदाराना व्यवहार को लेकर प्रकाशित खबरों पर चुटकियां लेते हुए बुलाकी शर्मा ने पुलिस तंत्र की नाकामियों, अदूरदर्शिता और काम को टालते रहने की प्रवृत्ति की जमकर आलोचना की है। 'जुर्माना बनाम ट्रेनिंग फीस' शीर्षक व्यंग्य लेख में तो व्यंग्यकार ने ट्रैफिक पुलिस की नासमझी का पर्दाफाश ही किया है। 'तालाब और मछली' शीर्षक व्यंग्य लेख में गुण्डा–गिरोहों के सामने दीन–हीन असहाय पुलिस थानों की बेबसी का अश्रुप्रवाहकारी चित्रण ही कर दिया गया है। पुलिसकर्मियों के परिजनों को पड़ौसियों के द्वारा आए दिन ताने सुनने पड़ते हैं। बुलाकी शर्मा ने अपने व्यंग्य लेखों में यह भी स्पष्ट कर दिया है कि समय–समय पर संचालित विभिन्न दिखावटी अभियानों के उपरांत भी जनता के बीच पुलिस की छवि में निखार नहीं आया है। उन्होंने 'चोर की पाती' लेख में पुलिस और समाजकंटकों की साठगांठ को अनावृत्त किया है। समग्रतः व्यंग्यकार की पैनी लेखनी पुलिस विभाग की पर्तें खोल जाती है।

बीज शब्द :

लालगुलाब, चोर की पाती, तालाब और मछली, ट्रैफिक, चालान, हेलमैट, चोरीचकारी, चौकस, गश्त, मारक, तन्द्राभंग, अचूकानन्द, अफसरनुमा, शराब तस्कर, छत्तीस का आंकड़ा इत्यादि।

सैद्धांतिक तौर पर तो भारतीय पुलिस को कानून और व्यवस्था का 'रक्षक' माना जाता है परन्तु ब्रिटिशकालीन वर्चस्व–भावना और स्वातंत्र्योत्तर भारत में विभिन्न प्रशासनिक विद्रूपताओं के चलते आज पुलिस ही 'भक्षक' बन गई है। हिन्दी व्यंग्यकारों ने विद्रूपतापूर्ण पुलिस तंत्र को भी अपने व्यंग्य का विषय बनाया है। लतीफ घोंघी ने लिखा है–'हमारे देश की पुलिस बड़ी ईमानदार है। सही चोर की तलाश करती है और गलत आदमी को चोर सिद्ध करती है। इसी बात के लिए उसे वेतन दिया जाता है ताकि अदालतें चलती रहें और देश की गरीबी दूर होती जाए।'[1] भारतीय पुलिस की अजीबो–गरीब कार्यशैली पर चुटकियां लेते हुए के.पी. सक्सेना ने आक्रोशपूर्वक लिखा है–"इधर आप रिपोर्ट लिखवाओ और उधर पुलिस तड़–से एक्शन में आई। जिसकी गर्दन मुट्ठी के नाप की मिली उसे मुजरिम करार दे दिया और थाने में ले जाकर उसी का अभिषेक भी कर दिया।[2] व्यंग्य–सम्राट परसाई जी का तो यहां तक कहना है कि 'मातादीन नामक इंस्पेक्टर चांद पर जाकर अपनी विशिष्ट कार्यशैली से वहां की आधी संस्कृति को तो नष्ट कर चुके थे यदि कुछ दिन और ठहर जाते तो पूरी संस्कृति नष्ट करके लौटते।[3] हरिशंकर परसाई जी ने तो पुलिस की कार्यप्रणाली का कच्चा चिट्ठा खोलते हुए पूरे–के–पूरे लेख ही लिख डाले थे यथा 'पुलिस शताब्दी समारोह', 'राष्ट्र का नया बोध', 'रामसिंह की ट्रेलिंग' आदि।[4] इसी प्रकार समय–समय पर विभिन्न व्यंग्यकारों ने भारतीय पुलिस तंत्र की विसंगतियों को अपने–अपने दृष्टिकोण से व्यंग्यायित किया है। मरूधरा के बीकानेर निवासी व्यंग्यकार–कथाकार बुलाकी शर्मा के विभिन्न व्यंग्य–लेखों में समकालीन पुलिस व्यवस्था की अव्यवस्था पर तिरछी नजरें डाली गई है। उनके कुछ व्यंग्य लेखों के शीर्षक ही पुलिस केन्द्रित है– यथा 'पुलिस और लाल गुलाब' तथा 'लीक छोड़ पुलिस चले' आदि । इस शोध–आलेख में ऐसे ही अन्य कुछ व्यंग्य लेखों में से चयनित अंशों के आलोक में व्यंग्यकार बुलाकी शर्मा द्वारा पुलिस विभाग संबंधी कटु यथार्थ का विश्लेषणात्मक अनुशीलन का प्रयत्न किया गया है।

पुलिस तंत्र की कार्यप्रणाली पर सवालिया निशान लगाते हुए अनेक समाचार पत्रों में खबरें पढ़ने को मिल जाती है। बुलाकी शर्मा ने भी अपनी व्यंग्य रचनाओं में यथाप्रसंग पुलिस की कार्यप्रणाली पर करारे तंज कसे है। एक उदाहरण प्रस्तुत है–"पुलिस की लाठी हमारी पीठ पर प्रेम से प्रहार करे या उसकी जुबान हमारी माँ–बहन का स्मरण करते हुए गालियों से हमारा सत्कार करें या किसी नेता अथवा अफसरनुमा

महानुभाव के वाहन की जांच किये बिना उसे सैल्यूट मार जाने दे और हम जैसे लदू–घासियो आमजन के पास वाहन संबंधी पूरे कागज–पत्तर होने पर टायर में हवा कम होने की बड़ी कमी बताते हुए चालान काटकर हमारा अभिवादन करे या जुआ–सट्टा के जमे–जमाये अड्डों को नजरअंदाज कर किसी चाय की थड़ी के पास ताशपत्ती खेल स्वयं की थकावट दूर करते मजदूरों को पक्का जुआरी मान उनको सुधारने के लिए धरपकड़ करे या किसी बीमार को इलाज के लिए अस्पताल ले जाती कार को शराब तस्करों की कार समझ डंडों से उसकी तोड़फोड़ करे या ऐसी ही कोई और घटनाएं हो जाएं तो हमें रत्तीभर भी अटपटा या अनुचित नहीं लगेगा क्योंकि हम मानते आए हैं कि हम जैसे आमजन के प्रति ऐसी सद्भावना उनकी कार्यप्रणाली का अहम् और अभिन्न हिस्सा है। यदि पुलिस सद्भावनापूर्वक ऐसी सख्ती नहीं करेगी तो वह कानून व्यवस्था बनाए रखते हुए हमारी सुरक्षा कैसे करेगी।[5] यहाँ व्यंग्यकार ने पुलिस विभाग की कार्यशैली को बैनकाब करते हुए स्तुति के व्याज से घोर भर्त्सना की है।

इसी प्रकार खस्ताहाल सड़कों पर पुलिस विभाग के उड़नदस्तों द्वारा भारी भरकम चालान काटे जाने के समाचारों पर प्रसंज्ञान लेते हुए व्यंग्यकार बुलाकी शर्मा ने 'जुर्माना बनाम ट्रेनिंग फीस' शीर्षक व्यंग्य–लेख में चालान की कॉपी पकड़े हुए आत्मचिंतन करते हुए पात्र का सजीव चित्रण किया है नए ट्रैफिक नियमों को देखते जुर्माने की राशि सम्मानजनक नहीं थी। एक ट्रक पर 59,000 रूपये के जुर्माने का चालान कटता है, एक स्कूटी पर 23,000 रूपये का जुर्माना लगता है और यूपी में बैलगाड़ी तक पर 1000 रूपये का चालान कट जाता है, ऐसे में उनकी जुर्माना राशि कहीं टिकने लायक नहीं थी। इसलिए उन्होंने अपना डबल अपमान मानते हुए चालान की प्रति तुरन्त अपनी जेब में डाल दी।[6]

व्यंग्यकार ने चुटकी लेते हुए चालान की बढ़ी हुई दरों के प्रति व्यंग्य कसते हुए जुर्माने को 'महान् बनने की ट्रेनिंग फीस' की संज्ञा देने का सुझाव रखा। "सुखलाल जी बोले–'सुगम नहीं, दुर्गम मार्ग पर चलते हुए मंजिल पाने वालों को ही महान् माना जाता है, अचूकानन्द जी। रोड लाइटों के बंद रहने पर भी सड़को के गहरे गड्ढों, आवारा पशुओं, कचरे के ढेर जैसी बाधाओं को पार कर जो दुर्घटनारहित सफर कर सकता है, वही जीवन में सफल हो सकता है। ट्रैफिक पुलिस हमें महान् बनने की ट्रेनिंग दे रही है। इसे हमें जुर्माना नहीं फीस कहना चाहिए। महान् बनने की ट्रेनिंग फीस।[7]

पुलिस तंत्र की नाकामियों को लेकर जहाँ समाचार पत्रों में आए दिन तीखी आलोचना भरी खबरें प्रकाशित होती है, उनका समाज के विभिन्न वर्गों पर भीषण दुष्प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। बुलाकी शर्मा ने अपने व्यंग्य लेख 'तालाब और मछली' में एक हताश पुलिस कांस्टेबल के हताश पुत्र के शब्दों में इस प्रकार पुलिस विभाग के प्रति गिरती आस्था का मर्मस्पर्शी निरूपण किया है–"वे कमरे में पहुंच सुपुत्र को मनाने लगे तो दिनभर के गुस्से का गुब्बारा अचानक फूट गया–आपकी वजह से स्कूल में मेरी मजाक हो रही है पापा। पहले सब फ्रैंडस मेरे से डरते थे कि इसके पापा पुलिस में है। मैं भी उन पर रौब झाड़ता रहता था किन्तु अब तो सब मेरी मजाक उड़ाने लगे हैं। कहते है, गरीबों पर पुलिस डंडे बरसाती है और गुंडों को देख अपनी जान बचाने के लिए इधर–उधर दुबक जाती है। थाने में बंद अपराधी को उसके गुंडे–बदमाश–साथी छुड़ाकर ले गए और पुलिस देखती रह गई। फ्रैंड्स मेरा मजाक उड़ाते है कि जो अपनी सेफ्टी नहीं कर सकती, वह पब्लिक का क्या करेगी? घटना कहीं की भी हो पापा, लेकिन आपके डिपार्टमेंट की है ना...... मैं स्कूल नहीं जाऊंगा..... मेरे से इंसल्ट सही नहीं जाती।[8] यहाँ व्यंग्यकार ने बाल मनोविज्ञान के धरातल पर पुलिसकर्मियों की पारिवारिक परिस्थितियों का कटु यथार्थ प्रस्तुत किया है।

पुलिस की अकर्मण्यता पर गंभीर प्रश्न उठाने के मामले में बुलाकी शर्मा के व्यंग्य लेख कहीं भी निष्फल नहीं रहे हैं। 'प्रभु की लीला प्रभु ही जाने।' शीर्षक लेख में व्यंग्यकार ने एक भगवान–विरोधी चोर के बारे में लिखा–"यह खबर एक ऐसे चोर की है, जो भगवान से वैर रखता है और सिर्फ मंदिरों में चोरी करता है। वह पंद्रह वर्ष की अल्पायु से ही ऐसे अधार्मिक कृत्य में लगा हुआ है। चालीस वर्ष का वह व्यक्ति पच्चीस मंदिरों में चोरी करके अब पहली बार पुलिस के चंगुल में फंसा हैं।[9]

पुलिस–तंत्र की सामान्यतः दमनकारी रीति नीति से भलीभांति वाकिफ आम आदमी जब कभी पुलिस के जनहितैषी अभियानों के बारे में समाचार पढ़ता है तो उसे एकबारगी तो विश्वास ही नहीं होता है। बुलाकी शर्मा ने इसी दुविधापूर्ण स्थिति की ओर संकेत करते हुए लिखा है–'लेकिन इसमें क्या तो पुलिस करे और क्या घुन या गीले।' कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए यदि ऐसा कभी हो जाता है तो कोई क्या कर सकता है। किन्तु यह सच है कि हमें पुलिस का यही चेहरा अपना–सा लगता है। यदि वह इसके विपरीत व्यवहार करे यानी जरूरत से ज्यादा हम पर प्रेम की वर्षा करने लगे तो हम घबरा जाते हैं जैसे की लखनऊ की एक मोहतरमा घबरा गई। किस्सा यह कि वहां सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान के अंतर्गत हेलमेट पहने दोपहिया वाहन चालकों को पुलिस ने लाल गुलाब भेंट किए। उन्हीं में से एक दानिश भाई घर पहुचे तो उनकी पत्नी घबराई कि उसके पतिदेव का किसी से अफेयर चल रहा है और उसी कलमुंही ने यह गुलाब दिया है। उस मोहतरमा का शक गैरवाजिब नहीं था क्योंकि गुलाब जैसा प्रेमिल उपहार देना पुलिस के स्वभाव से मेल नहीं खाता।[10]

यहाँ बुलाकी शर्मा ने आमजन के मानस पर अंकित पुलिस की छवि का यथार्थ चित्रण किया है। राज्य पुलिस का सैद्धांतिक ध्येय वाक्य (motto) तो है– 'आमजन में विश्वास, अपराधियों में डर' परन्तु यह विडम्बना ही है कि आमजन में पुलिस के प्रति अविश्वास की भावना घर कर गई है। सामाजिक सुरक्षा की दृष्टि से यह शोचनीय स्थिति है। व्यंग्यकार ने अपने एक व्यंग्यलेख में चालान कटने पर पात्र अचूकानंद की मनोव्यथा के मार्फत स्पष्ट लिखा है–'उन्होंने भड़ास निकाली 'चोरी–चकारी, गुंडा–गर्दी, लूट–खसोट आदि से हम सुरक्षित रहें या न रहे किन्तु पुलिस हमें सड़क पर सुरक्षित चलना सिखा कर रहेगी जी।'[11]

ऐसी बात नहीं है कि बुलाकी शर्मा ने केवल पुलिस तंत्र पर ही व्यंग्याघात किए हैं। उन्होंने तो नियम कायदे तोड़ने वाले आम आदमी को भी व्यंग्य वाणों में मर्माहत किया है। 'हैलमेट' का प्रयोग हमारी ही सुरक्षा के लिए जरूरी है परन्तु जो सिरफिरे यह नहीं मानते है। उनकी मनोदशा का सूक्ष्म चित्रांकन बुलाकी जी ने कुछ यूं किया है–'और ये ट्रैफिक पुलिस है कि चौरास्तों पर बिना हैलमेट पहने को यूं पकड़ती है जैसे कि हम, हम न होकर आनन्दपाल हो या उसके गुर्गे हो। अरे भई, हमें हैलमेट सूट नहीं करता। सूट इसलिए नहीं करता कि उसको पहनने का मतलब लीक पर चलता हुआ यानि नियम–कायदों के बंधन में पड़ना। सूरक्षा–वगैरह की चिंता अपुन नहीं करते। वैसे हम भी किसी औलम्पियन से कम नहीं है ट्रैफिक पुलिस को चकमा देने में। जहाँ ट्रैफिक पुलिस की चौकिंग नजर आएगी, किसी पतली गली से निकल जाएंगे। हडबडी और घबराहट में तेज स्पीड से बाइक भगाएंगे कि दुर्घटना कभी भी घट सकती है। हमें दुर्घटना की नहीं, अपने अहम, अपने मस्त मौलापन की सुरक्षा जरूरी लगती है।[12] यहाँ व्यंग्यकार ने पुलिस विभाग की मखौल उड़ाकर इतिश्री मान लेने वाले अल्पमति व्यक्तियों की नादानी की घोर भर्त्सना की है। इससे प्रतीत होता है कि बुलाकी शर्मा व्यक्तिगत रूप से पुलिसकर्मी विशेष के विरोधी नहीं है अपितु उनको व्यवस्था बिगाड़ने वाली जनता से भी समुचित नाराजगी है क्योंकि ऐसे तथाकथित मस्तमौला

वाहन चालक ही दुर्घटनाओं को ज्यादा भयंकर बना जाते है।

बुलाकी शर्मा कोरे छिद्रान्वेषी व्यंग्यकार–समालोचक भाव नहीं है। उन्होंने यथाप्रसंग पुलिस के आदर्श अभियानों की भी सराहना की है। लीक छोड़ पुलिस चले शीर्षक व्यंग्य में बुलाकी शर्मा ने लिखा है– "वाक्य यही खत्म नहीं होता। पुलिस वर्दी में सख्त दिखती है, किन्तु उनके भी बाल–बच्चे हैं। संवेदनशील मन है। यातायात प्रभारी ने उन बच्चों को प्यार से आईसक्रीम खिलाकर विदा किया। मतलब कि यहां पुलिस ने लीक छोड़ी। सख्त मानी जाती पुलिस ने संवेदनशीलता का परिचय दिया बच्चों को लाड–प्यार से आईसक्रीम खिलाकर।[13]

अपने एक व्यंग्यलेख 'पुलिस और लाल गुलाब' में भी बुलाकी शर्मा ने सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान के दौरान पुलिस द्वारा वाहन चालकों को भेंट स्वरूप लाल गुलाब दिए जाने का उल्लेख किया है।[14] अपने एक व्यंग्यलेख 'तालाब और मछली' में उन्होंने पुलिस हेड कांस्टेबल के परिवार का चित्रण किया है– "वर्दी को हैंगर पर टांगा और लुंगी पहनी। पूरी तरह रिलैक्स। वर्दी पहने हुए वे अकड़ और कड़क में रहते हैं, रिलैक्स रह ही नहीं सकते। किन्तु घर आते ही पता नहीं कैसे अकड़ और कड़क से मुक्त हो जाते हैं।[15] इन उदाहरणों से यह व्यंजित होता है कि बुलाकी शर्मा ने एक संवेदनशील मानवतावादी व्यंग्यकार के रूप में अत्यन्त ही संतुलित दृष्टिकोण का परिचय दिया है।

समग्रतः कहना ही होगा कि व्यंग्यकार बुलाकी शर्मा ने विभिन्न पूर्ववर्ती एवं समकालीन व्यंग्यकारों की ही भांति वर्तमान पुलिस तंत्र की आंतरिक खामियों की गांठे खोलकर पर्त–दर–पर्त उघाड़ दिया है। उनके व्यंग्य लेखन का वैशिष्ट्य इस बात में है कि वे पुलिस विभाग की केवल तथ्यात्मक विवेचना ही नहीं करते हैं बल्कि छोटे–छोटे ठोस प्रमाणों के साथ पुष्ट समालोचना दृष्टि रखते हुए सहज बोधगम्य व्यंग्य की रचना करने में सफल सिद्ध हुए है। वे पुलिस विभाग की कोरीनिंदा के लिए ही नहीं लिखते हैं बल्कि उसके पीछे उत्तरदायी कारणों की तह में भी गहराई तक उतरे हैं। पुलिस तंत्र के बारे में उनके व्यंग्य संतुलित समीक्षा का एक उत्तम प्रतिमान सामने लाते हैं।

शोधार्थी
(हिन्दी विभाग)
श्री खुशालदास विश्वविद्यालय, पीली बंगा
हनुमानगढ़ (राज.)
मो. 7014249070

संदर्भः–

1 घोंघी, लतीफ – चोरी न होने का दुःख, पृ. 31 (पुनः उद्धृत– डॉ. बहादुर सिंह 'हिन्दी साहित्य का इतिहास, माधव प्रकाशन, यमुना नगर, पृ. 55)
2 सक्सेना, के.पी. दृ बाजूबंद खुल–खुल जाए (पुनः उद्धृत–डॉ. बहादुर सिंह, पृ. 552)
3 परसाई, हरिशंकर दृ प्रतिनिधि व्यंग्य (पुनः उद्धृत डॉ. बहादुर सिंह, पृ. 553)
4 परसाई, हरिशंकर दृ परसाई रचनावली खण्ड प्रथम से उद्धृत (दृष्टव्य कल्ला, डॉ. नन्दलाल–हरिशंकर परसाई और नागफनी की कहानी, शैलजा प्रकाशन, पृ. सं. 2000, पृ. 25–34
5 शर्मा, बुलाकी–टिकाऊ सीढ़ियां उताऊ सीढ़ियां (व्यंग्य संग्रह) किताबगंज प्रकाशन, गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर (राज.) प्र.सं. 2019 ई. पृ. 117
6 शर्मा, बुलाकी दृ पांचवां कबीर (व्यंग्य संग्रह) प्रथम संस्करण इण्डिया नेट बुक्स, गौतम बुद्ध नगर, दिल्ली, 2020 ई., पृ. 45
7 शर्मा, बुलाकी–पांचवां कबीर (व्यंग्य संग्रह) प्रथम संस्करण सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर, संस्करण 2017 ई., पृ. 108
8 शर्मा, बुलाकी–पांचवां कबीर, पृ. 44
9 शर्मा, बुलाकी – आप तो बस आप हैं, पृ. 33
10 शर्मा, बुलाकी–टिकाऊ सीढ़ियां उठाऊं सीढ़ियां, पृ. 117–118 11
11 शर्मा, बुलाकी – पांचवां कबीर, पृ. 45
12 शर्मा, बुलाकी–आप तो बस आप ही हैं, पृ. 107
13 शर्मा, बुलाकी– आप तो बस आप ही हैं, पृ. 108
14 शर्मा, बुलाकी – टिकाऊ सीढ़ियां उठाऊं सीढ़ियां, पृ. 118
15 शर्मा, बुलाकी– पांचवां कबीर, पृ. 43

आपराधिक मामलों में न्याय प्रदान कराने में मध्यप्रदेश लोक अभियोजन की भूमिका

– रामकुमार खत्री

सारांश : अभियोजन का कार्य राज्य द्वारा न्यायालयों में प्रस्तुत किये आपराधिक मामलों में पीडित पक्ष को उचित न्याय प्रदान कराना है। आपराधिक मामलों में पीडित पक्ष को समय रहते उचित न्याय प्रदाय कराया जा सके अभियोजन का यह प्रथम कर्तव्य होना चाहिये।

न्यायालयों में आरोपी पक्ष की ओर से उनके द्वारा नियुक्त अधिवक्ताओं द्वारा मामलों का संबंधित न्यायालयों में पक्ष रखा जाता है। इसी प्रकार आपराधिक मामलों में पीडित पक्ष की ओर से संबंधित न्यायालयों में अभियोजन/अभियोजक अधिकारियों द्वारा राज्य की ओर से मामलों का पक्ष रखा जाता है। इस प्रकार आपराधिक मामलों में पीडित पक्ष को उचित न्याय प्रदान कराने में लोक अभियोजन/अभियोजक अधिकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

अभियोजन अधिकारियों को समाज में शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिए अपराधियों को समय रहते उचित दंड दिलवाना आवश्यक है, इसके अभाव में पुलिस एवं प्रशासन द्वारा समाज में शांति व्यवस्था कायम रखना संभव नहीं हो सकेगा।

लोक अभियोजन/लोक अभियोजक अधिकारियों का आपराधिक मामलों में अपराधियों को समय रहते उचित दण्ड दिलवाया जाना समाजहित में प्रत्येक व्यक्ति को शांति पूर्ण तरीके से जीवन व्यतीत करने के लिए अति आवश्यक है। इस प्रकार आपराधिक मामलों में न्याय प्रदान कराने में लोक अभियोजन/अभियोजक अधिकारियों का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

मुख्य शब्दावली :– अपराध, पीडित, राज्य, लोक अभियोजन, न्याय।

प्रस्तावना :– भारत संवैधानिक देश है संविधान के अनुसार सारे कार्य किए जाते है। भारत विश्व का सबसे बड़ा प्रजातांत्रिक देश है। भारत में विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान है, जिसकी उचित व्यवस्थाओं का पालन कराने के लिये भारत का उच्चत्तम न्यायालय प्रतिबद्ध है।

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह संविधान का पालन करे। भारत के प्रत्येक नागरिक एवं भारत में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को भारतीय विधियों का पालन करना अति आवश्यक है। समाज में शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिये समाज के प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह भारतीय विधियों, नियमों, कानूनों का कठोरता से पालन करे। भारतीय संविधान के अनुच्छेद–14 के अनुसार राज्य, भारत के राज्यक्षेत्र में किसी भी व्यक्ति को विधि के समक्ष समता से या विधियों के समान सरंक्षण से वंचित नहीं करेगा।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद – 20 के अनुसार अपराधों के लिये दोषसिद्धि के संबंध में संरक्षण प्रदान किया गया है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद – 21 के अनुसार प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण प्रदान किया गया है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद – 39(क) के अनुसार समान

न्याय और निःशुल्क विधिक सहायता का प्रबंध किया गया है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद– 50 के अनुसार कार्यपालिका से न्याय पालिका का पृथक्करण किया गया है। दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा 24, 25, एवं 25(क) में क्रमशः लोक अभियोजक, सहायक लोक अभियोजक एवं अभियोजन निदेशालय की व्यवस्था का उल्लेख है।

जब समाज के लोग आपराधिक कानूनों का उल्लंघन करते है तो पुलिस उन आपराधिक कानूनों का उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों के विरूद्ध की गई शिकायतों पर अनुसंधान कर आपराधिक मामला बनाती है, जिन्हें संबंधित न्यायालयों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। न्यायालयों के समक्ष उन आपराधिक मामलों का संचालन लोक अभियोजन अधिकारियों चाहे उन्हें किसी भी नाम से पुकारा जाये के द्वारा किया जाता है। यदि अभियोजन का संचालन करने वाले लोक अभियोजन अधिकारी न्यायालयों के समक्ष अच्छी तरह से अभियोजन का संचालन नही कर पाते है, या अनुसंधान की कमी या साक्ष्य और सबूतों के अभाव या अन्य कानूनी आवश्यकताओं की पूर्ति के अभाव में अपराधियों को उचित दण्ड नही दिला पाते है। तब आपराधिक तत्व के लोगों को उचित दण्ड नहीं मिलने से वे कानूनों का बार–बार उल्लंघन करेंगे जिससे समाज में शांति व्यवस्था कायम रखना संभव नहीं हो सकेगा।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर मनुष्य अपने आप को सुरक्षित महसूस करता है। प्रत्येक समाज की प्रथा एवं परम्परायें होती है जिनका पालन समाज के प्रत्येक व्यक्ति को करना होता है। प्रत्येक देश की अलग–अलग प्रथायें, परम्परायें एवं विधियाँ होती है। भारत विश्व का सबसे बडा लिखित संविधानिक देश है। भारत की समस्त विधियाँ संविधान के अनुरूप बनाई एवं चलाई जाती है।

भारत के प्रत्येक नागरिक एवं भारत में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को भारतीय विधियों का पालन करना अति आवश्यक है। समाज में शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिये समाज के प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह भारतीय विधियों, नियमों, कानूनों का कठोरता से पालन करे।

शोधार्थी
बरकतुउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल
5/1, रातीबड़ रोड, भोपाल (म.प्र.)
मोबा. 7587603221

संदर्भः–

1. अभियोजन सागर राजेन्द्र कुमार आई.पी.एस. इन्दिरा पब्लिसिंग हाउस।

2. पुलिस अनुसंधान एवं अभियोजन राजेन्द्र कुमार भा.पु.से. सीमा शर्मा इन्दिरा पब्लिसिंग हाउस।

3. अभियोजन अधिकारियों हेतु अध्ययन सामग्री राजेन्द्र कुमार भा.पु.से.।

4. भारतीय का संविधान डॉ. जय नारायण पाण्डेय सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी।

5. भारतीय का संविधान बृज किशोर शर्मा पी.एच.आई. लर्निग प्राइवेट लिमिटेड 6– दण्ड विधि संहिता रामनाथ मिश्र हिन्द पब्लिपिंग हाउस 7– दण्ड प्रक्रिया संहिता रतनलाल धीरज लाल लेकिसिस नेकसिस।

8. दण्ड प्रक्रिया संहिता आर.व्ही.केलकर ईस्टर्न बुक कंपनी।

बौद्ध जीवन-मार्ग

- शुभ कर्म करो। धूप और चन्दन की सुगंध कुछ ही दूर तक जाती है , किन्तु शील की सुगंध बहुत दूर तक जाती है।
- तृष्णा से दुःख पैदा होता है, तृष्णा से भय पैदा होता है, जो तृष्णा से मुक्त है, उसके लिए न दुःख है न भय है।
- जो शीलवान है, जो प्रज्ञावान है, जो न्यायी है, जो सत्यवादी है तथा जो अपने कर्तव्य को पूरा करता है, उससे सब प्यार करते है।
- किसी को क्लेश मत दो, किसी से द्वेष मत रखो।
- क्षमा सबसे बड़ा तप है, निर्वाण सबसे बड़ा सुख है।
- न जीव हिंसा करो और न करवाओ।
- आदमी वही कुछ होता है, जो कुछ उसका मन उसको बना देता है।
- सन्मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए मन की साधना पहला कदम है।
- राग के समान आग नहीं और लोभ के समान ओध (बाढ़) नहीं।
- बुद्धिमान बनो, न्यायशील रहो और संगति अच्छी रखो।
- ऊंचा जीवनस्तर नहीं, बल्कि ऊंचा –आचरण सुख का मूल मंत्र है।
- आरोग्य सबसे बड़ा लाभ है, संतोष सबसे बड़ा धन है , विश्वास सबसे बड़ा रिश्तेदार है और निर्वाण सबसे बड़ा सुख है।
- सर्वश्रेष्ठ मार्ग आर्य–अष्टांगिक मार्ग है, सर्वश्रेष्ठ सत्य चार आर्य सत्य है, सर्वश्रेष्ठ धर्म विराग है , सर्वश्रेष्ठ पुरुष वह है जो चक्षुमान (बुद्ध) है।
- प्रयास तो तुम्हें स्वयं करना होगा। तथागत तो केवल पथ प्रदर्शक है।

बुद्ध व्यापार, कारोबार, उद्योग, धन्धों के प्रबल समर्थक थे।

धम्मपद में लिखा है–

✻ **अट्ठानवतो सतीमतो, सुचिकम्मस्स निसम्म कारिनो।**
संयतस्स च धम्म जीविनो यसोभिवडढति॥

अर्थात : जो उद्यमी है, जागरुक है, पवित्र कर्म करने वाले , अप्रमादी, सोच-समझकर काम करने वाले, संयमी धर्मानुसार जीविका कमाने वाले मनुष्य के यश में वृद्धि होती है। व्यापार करने के लिए इन बातों को मानना आवश्यक है तभी वे व्यापार में सफल हो सकते है।

✻ **सद्धो सीलेन सम्पन्नो यसो भोग समप्पितो।**
यं यं पदे सं भजति तथ्य तथ्ये व पूजितो॥

अर्थात : जो श्रद्धावान है, शील सम्पन्न है, यशस्वी है, सभी भौतिक साधनों से युक्त है तथा प्रचुर सम्पत्तिवान है। ऐसे श्रेष्ठ लोग, भाग्यशाली व्यक्ति जहाँ-जहाँ जाते हैं , वहाँ-वहाँ उनकी पूजा यानी सम्मान होता है। इसलिये बहुजनों व्यापार की ओर बढ़ो।

भवतु सब्ब मंगलम्

पंजीयन संख्या
RNI No. MPHIN/2002/9510

डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2021-2023 उज्जैन (म.प्र.)

प्रतिष्ठा में ,

पत्र व्यवहार का पता :
20, बागपुरा, सांवेर रोड,
उज्जैन 456 010 (म.प्र.)

प्रकाशक, मुद्रक **पिंकी सत्यप्रेमी** ने भारती दलित साहित्य अकादमी की ओर से **मालवा ग्राफिक्स**, 29, वररुचि मार्ग, गुरुद्वारे के सामने, फ्रीगंज, उज्जैन फोन : 0734-4000030 से मुदित एवं 20, बागपुरा, सांवेर रोड, उज्जैन 456 010 (म.प्र.) फोन : 0734-2518379 से प्रकाशित।

सम्पादक : डॉ. तारा परमार